bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org

संवत 2080 युगाब्द 5125 कुल पृष्ठ –32 अगस्त द्वितीय अंक – 02

वर्तमान

कमल ज्योति

जय हिन्द!

₹20

G20
आज़ादी
अमृत

आईटी एवं सोशल मीडिया विभाग
प्रदेश कार्यशाला
दिनांक : 27 अगस्त, 2023 (रविवार)
स्थान : इंदिरा गाँधी प्रतिष्ठान, लखनऊ

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक

नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

मेरे सभी परिवारजनों को रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं! बहन और भाई के बीच अटूट विश्वास और अगाध प्रेम को समर्पित रक्षाबंधन का ये पावन पर्व, हमारी संस्कृति का पवित्र प्रतिबिंब है। मेरी कामना है, यह पर्व हर किसी के जीवन में स्नेह, सद्भाव और सौहार्द की भावना को और प्रगाढ़ करे।

सम्पादकीय

करूणामय, समावेशी और शांतिपूर्ण भविष्य...

विश्व मंच पर भारत की साख निखरती जा रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का विदेश दौरे सफल हो रहे हैं। अनेक देशों द्वारा राजकीय सम्मान मिल रहा। भारत विश्व व्यवस्था में अपनी पहचान उपयोगिता बढ़ाता जा रहा है। ऐसे में जी–20 देशों की अध्यक्षता कर रहा भारत, अनेक प्रकार की विविध प्रयोग सम्मेलन सफलता पूर्वक करते जा रहा है। इसी क्रम में सांस्कृतिक राजधानी काशी में संस्कृति मंत्रियों का सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उ0प्र0 के बढ़ते संवरते देश के लिए ये गौरव के पल है जब हम अन्तरिक्ष से लेकर धरा तक अपने मानवी दृष्टिकोण से जगत के कल्याण की अलख जगत रहे हैं। सबका साथ के साथ सबका विकास का मार्ग प्रसस्त हो रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वसुधैव कुटुंबकम के संदेश की अब दुनिया दीवानी हो गई है। सब एक पृथ्वी, एक परिवार व एक भविष्य की बात कर रहे हैं।

इस बीच केंद्रीय मंत्रियों की मौजूदगी में ब्राजील को क्विन बेटेन सौंपा। जी20 देशों का अगला सम्मेलन ब्राजील में होना है।

मुख्यमंत्री ने अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम सुर वसुधा में हिस्सा लिया। इस दौरान केंद्रीय मंत्री जी किशन रेड्डी, अर्जुन राम मेघवाल, मीनाक्षी लेखी, प्रदेश के पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह, स्वतंत्र देव सिंह, केंद्रीय संस्कृति सचिव गोविंद मोहन व उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्रा आदि मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये G-20 देशों के संस्कृति कार्य समूह व संस्कृति मंत्रियों से संवाद किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारतवासियों को सनातन और विविधतापूर्ण संस्कृति पर गर्व है। हम अपनी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को महत्व देते हैं। विरासत स्थलों को संरक्षित और पुनर्जीवित करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। भारत अपनी सांस्कृतिक संपदा और कलाकारों को गांवों के स्तर पर भी सहेज रहा है। अपनी संस्कृति का उत्सव मनाने के लिए जनजातीय संग्रहालय बनाए जा रहे हैं।

नई दिल्ली में प्रधानमंत्री संग्रहालय बना है, जो भारत की लोकतांत्रिक विरासत को प्रदर्शित करता है। दुनिया का सबसे बड़ा युगे–युगीन राष्ट्रीय संग्रहालय बनाया जा रहा है। पीएम मोदी ने कहा कि आपके समूह ने सबको एकजुट करने का अभियान शुरू किया है। यह भारत के वसुधैव कुटुंबकम, एक पृथ्वी, एक परिवार व एक भविष्य की भावना को समाहित करता है। आपका काम 4-C है। जिसमें कल्चर (संस्कृति), क्रिएटिविटी (रचनात्मकता), कॉमर्स (वाणिज्य) और कोलैबोरेशन (सहयोग) के महत्व को दर्शाते हैं। यह हमें एक करुणामय, समावेशी और शांतिपूर्ण भविष्य के निर्माण के लिए संस्कृति की शक्ति का उपयोग करने में समर्थ बनाएगा।

भारत लोकतंत्र की जननी है : मुर्मु

राष्ट्र के नाम संदेश

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति माननीय द्रौपदी मुर्मु जी का राष्ट्र के नाम संदेश के प्रमुख अंश–

मेरे प्यारे देशवासियो,

देश के 77वें स्वतंत्रता दिवस पर आप सभी को मेरी हार्दिक बधाई! यह दिन हम सब के लिए गौरवपूर्ण और पावन है। चारों ओर उत्सव का वातावरण देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। यह प्रसन्नता और गर्व की बात है कि कस्बों और गांवों में, यानी देश में हर जगह – बच्चे, युवा और बुजुर्ग – सभी उत्साह के साथ स्वतंत्रता दिवस के पर्व को मनाने की तैयारी कर रहे हैं। हमारे देशवासी बड़े उत्साह के साथ 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मना रहे हैं।

स्वाधीनता दिवस का उत्सव मुझे मेरे बचपन के दिनों की याद भी दिलाता है। अपने गाँव के स्कूल में स्वतंत्रता दिवस समारोह में भाग लेने की हमारी खुशी, रोके नहीं रुकती थी। जब तिरंगा फहराया जाता था तब हमें लगता था जैसे हमारे शरीर में बिजली सी दौड़ गई हो। देशभक्ति के गौरव से भरे हुए हृदय के साथ हम सब, राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते थे तथा राष्ट्रगान गाते थे। मिठाइयाँ बाँटी जाती थीं और देशभक्ति के गीत गाए जाते थे, जो कई दिनों तक हमारे मन में गूँजते रहते थे। यह मेरा सौभाग्य रहा कि जब मैं, स्कूल में शिक्षक बनी तो मुझे उन अनुभवों को फिर से जीने का अवसर प्राप्त हुआ।

हम सभी, समान रूप से, इस महान देश के नागरिक हैं। हम सब को समान अवसर और अधिकार उपलब्ध हैं तथा हमारे कर्तव्य भी समान हैं।

जब हम बड़े होते हैं, तो हम अपनी खुशी को बच्चों की तरह व्यक्त नहीं कर पाते, लेकिन मुझे विश्वास है कि राष्ट्रीय पर्वों से जुड़ी देशभक्ति की गहरी भावना में तनिक भी कमी नहीं आती है। स्वतंत्रता दिवस हमें यह याद दिलाता है कि हम केवल एक व्यक्ति ही नहीं हैं, बल्कि हम एक ऐसे महान जन–समुदाय का हिस्सा हैं जो अपनी तरह का सबसे बड़ा और जीवंत समुदाय है। यह विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के नागरिकों का समुदाय है।

जब हम स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाते हैं तो वास्तव में हम एक महान लोकतन्त्र के नागरिक होने का उत्सव भी मनाते हैं। हममें से हर एक की अलग–अलग पहचान है। जाति, पंथ, भाषा और क्षेत्र के अलावा, हमारी अपने परिवार और कार्य–क्षेत्र से जुड़ी पहचान भी होती है। लेकिन हमारी एक पहचान ऐसी है जो इन सबसे ऊपर

है, और हमारी वह पहचान है, भारत का नागरिक होना। हम सभी, समान रूप से, इस महान देश के नागरिक हैं। हम सब को समान अवसर और अधिकार उपलब्ध हैं तथा हमारे कर्तव्य भी समान हैं।

लेकिन ऐसा हमेशा नहीं था। भारत लोकतंत्र की जननी है और प्राचीन काल में भी हमारे यहां जमीनी स्तर पर लोकतांत्रिक संस्थाएं विद्यमान थीं। किन्तु लंबे समय तक चले औपनिवेशिक शासन ने उन लोकतान्त्रिक संस्थाओं को मिटा दिया था। 15 अगस्त, 1947 के दिन देश ने एक नया सवेरा देखा। उस दिन हमने विदेशी शासन से तो आजादी हासिल की ही, हमने अपनी नियति का निर्माण करने की स्वतंत्रता भी प्राप्त की।

हमारी स्वाधीनता के साथ, विदेशी शासकों द्वारा उपनिवेशों को छोड़ने का दौर शुरू हुआ और उपनिवेशवाद समाप्त होने लगा। हमारे द्वारा स्वाधीनता के लक्ष्य को प्राप्त करना तो महत्वपूर्ण था ही, लेकिन उससे भी अधिक उल्लेखनीय है, हमारे स्वाधीनता संग्राम का अनोखा तरीका। महात्मा गांधी तथा अनेक असाधारण एवं दूरदर्शी विभूतियों के नेतृत्व में, हमारा राष्ट्रीय आंदोलन अद्वितीय आदर्शों से अनुप्राणित था। गांधीजी तथा अन्य महानायकों ने भारत की आत्मा को फिर से जगाया और हमारी महान सभ्यता के मूल्यों का जन–जन में संचार किया। भारत के ज्वलंत उदाहरण का अनुसरण करते हुए, हमारे स्वाधीनता संग्राम की आधारशिला – 'सत्य और अहिंसा' – को पूरी दुनिया के अनेक राजनीतिक संघर्षों में सफलतापूर्वक अपनाया गया है।

मैं भारत के नागरिकों के साथ एकजुट हो कर सभी ज्ञात और अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों को कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं।

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर, मैं भारत के नागरिकों के साथ एकजुट हो कर सभी ज्ञात और अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों को कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं। उनके असंख्य बलिदानों से, भारत ने विश्व समुदाय में अपना स्वाभिमान–पूर्ण स्थान फिर से प्राप्त किया। मातंगिनी हाजरा और कनकलता बरुआ जैसी वीरांगनाओं ने भारत माता के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिये। माँ कस्तूरबा, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के साथ कदम से कदम मिलाकर सत्याग्रह के मार्ग पर चलती रहीं। सरोजिनी नायडू, अम्मू स्वामीनाथन, रमा देवी, अरुणा आसफ़–अली और सुचेता कृपलानी जैसी अनेक महिला विभूतियों ने अपने बाद की सभी पीढ़ियों की महिलाओं के लिए आत्म–विश्वास के साथ, देश तथा समाज की सेवा करने के प्रेरक आदर्श प्रस्तुत किए हैं। आज महिलाएं विकास और देश सेवा के हर क्षेत्र में बढ़–चढ़कर योगदान दे रही हैं तथा राष्ट्र का गौरव बढ़ा रही हैं। आज हमारी महिलाओं ने ऐसे अनेक क्षेत्रों में अपना विशेष स्थान बना लिया है जिनमें कुछ दशकों पहले उनकी भागीदारी की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

मुझे यह देखकर प्रसन्नता होती है कि हमारे देश में महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। आर्थिक सशक्तीकरण से परिवार और समाज में महिलाओं की स्थिति मजबूत होती है। मैं सभी देशवासियों से आग्रह करती हूँ कि वे महिला सशक्तीकरण को प्राथमिकता दें। मैं चाहूंगी कि हमारी बहनें और बेटियाँ साहस के साथ, हर तरह की चुनौतियों का सामना करें और जीवन में आगे बढ़ें। महिलाओं का विकास, स्वाधीनता संग्राम के आदर्शों में शामिल है।

भारत की G–20 की अध्यक्षता में एक नई बात यह है कि कपचसवउंबल को जमीन से जोड़ा गया है। एक अंतर–राष्ट्रीय राजनयिक गतिविधि में लोगों की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए अपनी तरह का पहला अभियान चलाया गया है। उदाहरण के लिए, यह देखकर मुझे अच्छा लगा कि स्कूलों और कॉलेजों में G–20 से जुड़े विषयों पर आयोजित की जा रही गतिविधियों में विद्यार्थी उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं। G–20 से जुड़े कार्यक्रमों के बारे में सभी नागरिकों में बहुत उत्साह देखने को मिल रहा है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि आर्थिक विकास के साथ–साथ मानव विकास संबंधी सरोकारों को भी उच्च प्राथमिकता दी जा रही है। मैं एक शिक्षक रही हूँ, इस नाते भी मैंने यह समझा है कि शिक्षा, सामाजिक सशक्तीकरण का सबसे प्रभावी माध्यम है। वर्ष 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति से बदलाव आना शुरू हो गया है। विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों और शिक्षाविदों के साथ मेरी बातचीत से मुझे ज्ञात हुआ है कि अध्ययन की प्रक्रिया अधिक flexible हो गई है। इस दूरदर्शी नीति का एक प्रमुख उद्देश्य प्राचीन मूल्यों को आधुनिक कौशल के साथ जोड़ना है। इससे, आने वाले वर्षों में, शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन होंगे और परिणामस्वरूप, देश में एक

बहुत बड़ा बदलाव दिखाई देगा। भारत की प्रगति को, देशवासियों, विशेषकर युवा पीढ़ी के सपनों से शक्ति मिलती है। विकास की अनंत संभावनाएं देशवासियों की प्रतीक्षा कर रही हैं। स्टार्ट–अप से लेकर खेल–कूद तक, हमारे युवाओं ने उत्कृष्टता के नए आसमानों की उड़ान भरी है।

आज के नए भारत की महत्वाकांक्षाओं के नए क्षितिज असीम हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन नई ऊंचाइयों को छू रहा है और उत्कृष्टता के नए आयाम स्थापित कर रहा है। इस वर्ष, ISRO ने चंद्रयान–3 संनदबी किया है, जो चंद्रमा की कक्षा में प्रवेश कर चुका है, और कार्यक्रम के अनुसार उसका 'विक्रम' नामक Lander तथा 'प्रज्ञान' नामक Rover अगले कुछ ही दिनों में चंद्रमा पर उतरेंगे। हम सभी के लिए वह गौरव का क्षण होगा और मुझे भी उस पल का इंतजार है। चंद्रमा का अभियान अन्तरिक्ष के हमारे भावी कार्यक्रमों के लिए केवल एक सीढ़ी है। हमें बहुत आगे जाना है।

प्यारे देशवासियो, असामान्य मौसम की घटनाएँ सभी पर असर डालती हैं। लेकिन गरीब और वंचित वर्गों के लोगों पर उनका और अधिक प्रभाव पड़ता है। शहरों और पहाड़ी क्षेत्रों को जल–वायु परिवर्तन की स्थितियों का सामना करने के लिए विशेष रूप से सक्षम बनाने की आवश्यकता है। मैं यह कहना चाहूंगी कि लोभ की संस्कृति दुनिया को प्रकृति से दूर करती है और अब हमें यह एहसास हो रहा है कि हमें अपनी जड़ों की ओर लौटना चाहिए। आज भी अनेक जन– जातीय समुदाय ऐसे हैं जो प्रकृति के बहुत करीब और प्रकृति के साथ सौहार्द बनाकर रहते हैं। उनके जीवन–मूल्य और जीवन–शैली climate action के क्षेत्र में अमूल्य शिक्षा प्रदान करते हैं।

जन–जातीय समुदायों द्वारा युगों से अपना अस्तित्व बनाए रखने के रहस्य को एक शब्द में ही व्यक्त किया जा सकता है। वह शब्द हैः हमदर्दी। जन–जातीय समुदाय के लोग प्रकृति को माता समझते हैं तथा उसकी सभी संतानों अर्थात वनस्पतियों और जीव–जंतुओं के प्रति सहानुभूति रखते हैं। कभी–कभी दुनिया में हमदर्दी की कमी महसूस होती है। लेकिन इतिहास साक्षी है कि ऐसे दौर केवल कुछ समय के लिए ही आते हैं, क्योंकि करुणा हमारा मूल स्वभाव है। मेरा अनुभव है कि महिलाएं हमदर्दी के महत्व को और अधिक गहराई से महसूस करती हैं और जब मानवता अपनी राह से भटकती है तो वे सही रास्ता दिखाती हैं। हमारे देश ने नए संकल्पों के साथ 'अमृत काल' में प्रवेश किया है तथा हम भारत को वर्ष 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। आइए, हम सभी अपने संवैधानिक मूल–कर्तव्य को निभाने का संकल्प लें तथा व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर आगे बढ़ने का सतत प्रयास करें ताकि हमारा देश निरंतर उन्नति करते हुए कर्मठता तथा उपलब्धियों की नई ऊंचाइयां हासिल करे।

प्यारे देशवासियो, हमारा संविधान हमारा मार्गदर्शक दस्तावेज है। संविधान की प्रस्तावना में हमारे स्वाधीनता संग्राम के आदर्श समाहित हैं। आइए, हम अपने राष्ट्र निर्माताओं के सपनों को साकार करने के लिए सद्भाव और भाई–चारे की भावना के साथ आगे बढ़ें।

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर, मैं पुनः आप सब को, विशेष रूप से सीमाओं की रक्षा करने वाले सेना के जवानों, आंतरिक सुरक्षा प्रदान करने वाले सभी बलों एवं पुलिस के जवानों तथा दुनिया के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले प्रवासी भारतीयों को बधाई देती हूँ। सभी प्यारे देशवासियों को बहुत–बहुत शुभकामनाएं!

हमें सपनों का भारत बनाना है : प्रधानमंत्री

स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से वसुधैव कुटुम्बकम् के सभी परिवारी जनों को सम्बोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा कि–

मेरे प्रिय 140 करोड़ परिवारजन,

दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र और अब बहुत लोगों का अभिप्राय है ये जनसंख्या की दृष्टि से भी हम विश्व में नंबर एक पर हैं। इतना बड़ा विशाल देश, 140 करोड़ देश, ये मेरे भाई–बहन, मेरे परिवारजन आज आजादी का पर्व मना रहे हैं। मैं देश के कोटि–कोटि जनों को, देश और दुनिया में भारत को प्यार करने वाले, भारत का सम्मान करने वाले, भारत का गौरव करने वाले कोटि–कोटि जनों को आजादी के इस महान पवित्र पर्व की अनेक–अनेक शुभकामनाएं देता हूं।

पूज्य बापू के नेतृत्व में असहयोग का आंदोलन, सत्याग्रह की मूवमेंट और भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू जैसे अनगिनत वीरों का बलिदान, उस पीढ़ी में शायद ही कोई व्यक्ति होगा जिसने देश की आजादी में अपना योगदान न दिया हो। मैं आज देश की आजादी की जंग में जिन–जिन ने योगदान दिया है, बलिदान दिए हैं, त्याग किया है, तपस्या की है, उन सबको आदरपूर्वक नमन करता हूं, उनका अभिनंदन करता हूं। आज 15 अगस्त महान क्रांतिकारी और अध्यात्म जीवन के रूचि तुल्य प्रणेता श्री अरविंदों की 150वीं जयंती पूर्ण हो रही है। ये वर्ष स्वामी दयानंद सरस्वती के 150वीं जयंती का वर्ष है। ये वर्ष रानी दुर्गावती के 500वीं जन्मशती का बहुत ही पवित्र अवसर है जो पूरा देश बड़े धूमधाम से मनाने वाला है। ये वर्ष मीराबाई भक्ति योग की सिरमौर मीराबाई के 525 वर्ष का भी ये पावन पर्व है। इस बार जब हम 26 जनवरी मनाएंगे वो हमारे गणतंत्र दिवस की 75वीं वर्षगांठ होगी। अनेक प्रकार से अनेक अवसर, अनेक संभावनाएं राष्ट्र निर्माण में जुटे रहने के लिए पल–पल नई प्रेरणा, पल–पल नई चेतना, पल–पल सपने, पल–पल संकल्प, शायद इससे बड़ा कोई अवसर नहीं हो सकता।

इस बार प्राकृतिक आपदा ने देश के अनेक हिस्सों में अकल्पनीय संकट पैदा किए। जिन परिवारों ने इस संकट में सहन किया है मैं उन सभी परिवाजनों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूं और राज्य–केंद्र सरकार मिल करके उन सभी संकटों से जल्दी से मुक्त हो करके फिर तेज गति से आगे बढ़ेंगे ये विश्वास दिलाता हूं।

पिछले कुछ सप्ताह नार्थ–ईस्ट में विशेषकर मणिपुर में और हिन्दुस्तान के भी अन्य कुछ भागो में, लेकिन विशेषकर मणिपुर में जो हिंसा का दौर चला, कई लोगों को अपना जीवन खोना पड़ा, मां–बेटियों के सम्मान के साथ खिलवाड़ हुआ, लेकिन कुछ दिनों से लगातार शांति की खबरें आ रही हैं, देश मणिपुर के लोगों के साथ

है। देश मणिपुर के लोगों ने पिछले कुछ दिनों से जो शांति बनाई रखी है, उस शांति के पर्व को आगे बढ़ाए और शांति से ही समाधान का रास्ता निकलेगा। और राज्य और केंद्र सरकार मिलकर के उन समस्याओं के समाधान के लिए भरपूर प्रयास कर रही है, करती रहेगी। जब हम इतिहास की तरफ नजर करते हैं तो इतिहास में कुछ पल ऐसे आते हैं जो अपनी अमिट छाप छोडकर के जाते है। और उसका प्रभाव सदियों तक रहता है और कभी–कभी शुरूआत में वो बहुत छोटा लगता है, छोटी सी घटना लगती है, लेकिन वो अनेक समस्याओं की जड़ बन जाती है। हमें याद है 1000–1200 साल पहले इस देश पर आक्रमण हुआ। एक छोटे से राज्य के छोटे से राजा का पराजय हुआ। लेकिन तब पता तक नहीं था कि एक घटना भारत को हजार साल की गुलामी में फंसा देगी। और हम गुलामी में जकड़ते गए, जकड़ते गए, जकड़ते गए जो आया लूटता गया, जो जिसका मन चाहा हम पर आकर सवार हो गया। कैसा विपरीत काल रहा होगा, वो हजार साल का।

घटना छोटी क्यों न हो, लेकिन हजार साल तक प्रभाव छोड़ती रही है। लेकिन मैं आज इस बात का जिक्र इसलिए करना चाहता हूं कि भारत के वीरों ने इस कालखण्ड में कोई भू–भाग ऐसा नहीं था, कोई समय ऐसा नहीं था, जब उन्होंने देश की आजादी की लौ को जलता ना रखा हो, बलिदान की परंपरा न बनाई हो। मां भारती बेड़ियों से मुक्त होने के लिए उठ खड़ी हुई थी, जंजीरों को झकझोर रही थी और देश की नारी शक्ति, देश की युवा शक्ति, देश के किसान, देश के गांव के लोग, मजदूर कोई हिन्दुस्तानी ऐसा नहीं था, जो आजादी के सपने को लेकर के जीता न हो। आजादी को पाने के लिए मर–मिटने के लिए तैयार होने वालों की एक बड़ी फौज तैयार हो गई थी। जेलों में जवानी खपाने वाले अनेक महापुरूष हमारी देश की आजादी को, गुलामी के बेड़ियों को तोड़ने के लिए लगे हुए थे।

जनचेतना का वो व्यापक रूप, त्याग और तपस्या का वो व्यापक रूप जन–जन के अंदर एक नए विश्वास जगाने वाला वो पल आखिकार 1947 में देश आजाद हुआ, हजार साल की गुलामी में संजोये हुए सपने देशवासियों ने पूरे करते हुए देखे।

मैं हजार साल पहले की बात इसलिए कह रहा हूं, मैं देख रहा हूं फिर एक बार देश के सामने एक मौका आया है, हम ऐसे कालखण्ड में जी रहे हैं, ऐसे कालखण्ड में हमने प्रवेश किया है और यह हमारा सौभाग्य है कि भारत के ऐसे अमृतकाल में, यह अमृतकाल का पहला वर्ष है या तो हम जवानी में जी रहे हैं या हम मां भारती की गोद में जन्म ले चुके हैं। और ये कालखण्ड मेरे शब्द लिखकर के रखिए मेरे प्यारे परिवारजनों इस कालखण्ड में जो हम करेंगे, जो कदम उठाऐंगे, जितना त्याग करेंगे, तपस्या करेंगे। सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय, एक के बाद एक फैसले लेंगे, आने वाले एक

हजार साल का देश का स्विर्णिम इतिहास उससे अंकुरित होने वाला है। इस कालखंड में होने वाली घटनाएं आगामी एक हजार साल के लिए इसका प्रभाव पैदा करने वाली हैं।

गुलामी की मानसिकता से बाहर निकला हुआ देश पंचप्राण को समर्पित हो करके एक नए आत्मविश्वास के साथ आज आगे बढ़ रहा है। नए संकल्पों को सिद्ध करने के लिए वो जी–जान से जुड़ रहा है। मेरी भारत माता जो कभी ऊर्जा का सामर्थ्य था, लेकिन राख के ढेर में दबी पड़ी थी। वो भारत माँ 140 करोड़ देशवासियों के पुरुषार्थ से, उनकी चेतना से, उनकी ऊर्जा से फिर एक बार जागृत हो चुकी है। मां भारती जागृत हो चुकी है और मैं साफ देख रहा हूँ दोस्तों, यही कालखंड है, पिछले 9–10 साल हमने अनुभव किया है। विश्व भर में भारत की चेतना के प्रति, भारत के सामर्थ्य– के प्रति एक नया आकर्षण, नया विश्वास, नई आशा पैदा हुई है और ये प्रकाश पुंज जो भारत से उठा है वो विश्व को उसमें अपने लिए ज्योति नजर आ रही है। विश्व को एक नया विश्वास पैदा हो रहा है। हमारा सौभाग्य है कुछ ऐसी चीजें हमारे पास हैं जो हमारे पूर्वजों ने हमें विरासत में दी है और वर्तमान कालखंड ने गढ़ी है। आज हमारे पास डेमोग्राफी है, आज हमारे पास डेमोक्रेसी है, आज हमारे पास डाइवर्सिटी है। डेमोग्राफी, डेमोक्रेसी और डाइवर्सिटी की ये त्रिवेणी भारत के हर सपने को साकार करने का सामर्थ्य रखती है। आज पूरे विश्व में वहां देशों की उम्र ढल रही है, ढलाव पर है तो भारत यौवन की तरफ ऊर्जावान हो करके बढ़ रहा है। कितने बड़े गौरव का कालखंड है कि आज 30 साल की कम आयु की जनसंख्या दुनिया में सर्वाधिक कहीं है तो ये मेरे भारत मां की गोद में है। ये मेरे देश में है और 30 साल से कम उम्र के नौजवान हों, मेरे देश के पास हो, कोटि–कोटि भुजाएं हों, कोटि–कोटि मस्तिष्क हों, कोटि–कोटि सपने, कोटि–कोटि संकल्प हों तो भाईयों और बहनों, मेरे प्रिय परिवारजनों हम इच्छित परिणाम प्राप्त करके रह सकते हैं।

राष्ट्रीय चेतना वो एक ऐसा शब्द है जो हमें चिंताओं से मुक्त कर रहा है। और आज वो राष्ट्रीय चेतना यह सिद्ध कर रही है कि भारत का सबसे बड़ा सामर्थ्य बना है भरोसा, भारत का सबसे बड़ा सामर्थ्य बना है विश्वास, जन–जन में हमारा विश्वास, जन–जन का सरकार पर विश्वास, जन–जन का देश के उज्ज्वल भविष्य पर विश्वास और विश्व का भी भारत के प्रति विश्वास। यह विश्वास हमारी नीतियों का है, हमारी रीति का है। भारत के उज्ज्वल भविष्यं को जिस निर्धारित मजबूत कदमों से हम आगे बढ़ा रहे हैं उसका है।

मेरे प्यारे परिवारजनों, यह बात निश्चित है कि भारत का सामर्थ्य और भारत की संभावनाएं विश्वास की नई बुलंदियों को पार करने वाली है और यह विश्वास की नई बुलंदियां नये सामर्थ्य को ले करके चलनी चाहिए। आज देश में जी–20 समिट की मेहमान नवाजी का भारत को अवसर मिला है। और पिछले एक साल से हिन्दुस्तान के हर कोने में जिस प्रकार से जी–20 के अनेक ऐसे आयोजन हुए हैं, अनेक कार्यक्रम हुए हैं, उसने देश के सामान्य मानवी के सामर्थ्य को विश्व को परिचित करा दिया है। भारत की विविधता का परिचय कराया है। भारत की डायवर्सिटी को दुनिया अचम्भे से देख रही है और उसके कारण भारत के करीब आकर्षण बढ़ा है। भारत को जानने की, समझने की इच्छा जगी है। उसी प्रकार से आप देखिए, एक्स पोर्ट, आज भारत का एक्सेपोर्ट तेजी से बढ़ रहा है और मैं कहना चाहता हूं दुनिया के एक्सपर्टस इन सारे मानदंडों के आधार पर कह रहे हैं कि अब भारत रूकने वाला नहीं है। दुनिया की कोई भी रेटिंग एजेंसी होगी वो भारत का गौरव कर रही है। कोरोना काल के बाद दुनिया एक नये सिरे से सोचने लगी है। और मैं विश्वांस से देख रहा हूं कि जिस प्रकार से द्वितीय महायुद्ध के बाद, द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद दुनिया में एक नया वर्ल्ड ऑर्डर ने आकार लिया था। मैं साफ–साफ देख रहा हूं कि कोरोना के बाद एक नया विश्व ऑर्डर, एक नया ग्लोबल ऑर्डर, एक नया जियो पॉलिटिकल इक्वेशन यह बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। जियो पॉलिटिकल इक्वेशन की सारी व्याख्याएं बदल रही हैं, परिभाषाएं बदल रही हैं। और मेरे प्यारे परिवाजनों, आप गौरव करेंगे बदलते हुए विश्व को शेप देने में आज मेरे 140 करोड़ देशवासियों आपका सामर्थ्य नजर आ रहा है। आप निर्णायक मोड़ पर खड़े हैं।

और कोरोना काल में भारत ने जिस प्रकार से देश को आगे बढ़ाया हे, दुनिया ने हमारे सामर्थ्य को देखा है। जब दुनिया की supply chain तहस–नहस हो गई थी, बड़ी–बड़ी अर्थव्यवस्था पर दबाव था, उस समय भी हमने कहा था हमें विश्व का विकास देखना है, तो वो मानव केंद्रित होना चाहिए, मानवीय संवेदनाओं से भरा हुआ होना चाहिए, और तब जा करके समस्याओं का सही समाधान निकालेंगे और कोविड ने हमें सिखाया है या हमें मजबूर किया है, लेकिन मानवीय संवेदनाओं को छोड़ करके हम विश्व का कल्याण नहीं कर सकते।

आज भारत ग्लोबल साउथ की आवाज बन रहा है। भारत की समृद्धि, विरासत आज दुनिया के लिए एक अवसर बन रही है। ग्लोबल इकोनॉमी, ग्लो्बल supply chain में भारत की हिस्सेदारी, मैं पक्के विश्वांस से कहता हूं, आज जो भारत में परिस्थिति पैदा हुई है, आज जो

भारत ने कमाया है, वो दुनिया में स्थिरता की गारंटी ले करके आया है दोस्तों। अब न हमारे मन में, न 140 करोड़ मेरे परिवारजनों के मन में और न ही दुनिया के मन में कोई ifs हैं कोई buts हैं, विश्वांस बन चुका है।

जब हम 2014 में आए थे, तो हम वैश्विक अर्थव्यवस्था में 10वें नंबर पर थे और आज 140 करोड़ देशवासियों का पुरुषार्थ रंग लाया है कि हम विश्व की अर्थव्यवस्था में 5वें नंबर पर पहुंच चुके हैं। और ये ऐसे ही नहीं हुआ है जब भ्रष्टाचार का राक्षस देश को दबोचे हुए थे, लाखों–करोड़ के घोटाले अर्थव्यवस्था को डावाडोल कर रहे थे, governance, fragile फाइल में देश की पहचान होने लगी थी। Leakages को हमने बंद किया, मजबूत अर्थव्यवस्था बनाई, हमने गरीब कल्याण के लिए ज्यादा से ज्यादा धन खर्च करने का प्रयास किया। और आज मैं देशवासियों को बताना चाहता हूं कि जब देश आर्थिक रूप से समृद्ध होता है तो सिर्फ तिजोरी नहीं भरती है, देश का सामर्थ्य बढ़ता है, देशवासियों का सामर्थ्य बढ़ता है और तिजोरी का पाई–पाई अगर ईमानदारी से जनता–जनार्दन के लिए खर्च करने का संकल्प लेने वाली सरकार हो तो परिणाम कैसा आता है। मैं 10 साल का हिसाब तिरंगे की साक्षी में लाल किले की प्राचीर से मेरे देशवासियों को दे रहा हूं। आंकड़े देखकर के आपको लगेगा इतना बड़ा बदलाव, इतना बड़ा सामर्थ्य। 10 साल पहले राज्यों को 30 लाख करोड़ रूपये भारत सरकार की तरफ से जाते थे। पिछले 9 साल में ये आंकड़ा 100 लाख करोड़ पर पहुंचा है।

जब हम 2014 में आए थे, तो हम वैश्विक अर्थव्यवस्था में 10वें नंबर पर थे और आज 140 करोड़ देशवासियों का पुरुषार्थ रंग लाया है कि हम विश्व की अर्थव्यवस्था में 5वें नंबर पर पहुंच चुके हैं।

और जब साढ़े 13 करोड़ लोग गरीबी की इस मुसीबतों से बाहर निकलते हैं तो कैसी–कैसी योजनाओं ने उन्हें मदद दी है, उनको आवास योजना का लाभ मिलना, पीएम स्वीनिधि से 50 हजार करोड़ रुपए रेहड़ी–पटरी वालों तक पहुंचाया है। आने वाले दिनो में, आने वाली विश्वकर्मा जयन्ती पर एक कार्यक्रम हम आगे लागू करेंगे, इस विश्वकर्मा जयन्ती पर हम करीब 13–15 हजार करोड़ रुपया से जो परम्परागत कौशल्य से रहने वाले लोग, जो औजार से और अपने हाथ से काम करने वाला वर्ग है, ज्यादातर ओबीसी समुदाय से है। हमारे सुथार हों, हमारे सुनार हों, हमारे राजमित्री हों, हमारे कपड़े धोने वाले काम करने वाले लोग हों, हमारे बाल काटने वाले भाई–बहन परिवार हों, ऐसे लोगों को एक नई ताकत देने के लिए हम आने वाले महीने में विश्वकर्मा जयन्ती पर विश्वकर्मा योजना लॉन्चं करेंगे और करीब 13–15 हजार करोड़ रुपये से उसका प्रारंभ करेंगे। हमने पीएम किसान सम्मान निधि में ढाई लाख करोड़ रुपया सीधा मेरे देश के किसानों के खाते में जमा किया है। हमने जल जीवन मिशन हर घर में शुद्ध पानी पहुंचे, दो लाख करोड़ रुपया खर्च किया है। हमने आयुष्मान भारत योजना ताकि गरीब को बीमारी के कारण अस्पताल जाने से जो मुसीबत होती थी, उससे मुक्ति दिलाना। उसको दवाई मिले, उसका उपचार हो, ऑपरेशन हो अच्छे से अच्छे हॉस्पिटल में हो, आयुष्मान भारत योजना के तहत 70 हजार करोड़ रुपये हमने लगाए हैं। पशुधन देश ने कोरोना वैक्सीन की बात तो देश को याद है, 40 हजार करोड़ रुपये लगाए, वो तो याद है लेकिन आपको जानकर के खुशी होगी हमने पशुधन को बचाने के लिए करीब–करीब 15 हजार करोड़ रुपया पशुधन के टीकाकरण के लिए लगाया है।

जन औषधि केंद्रों ने, देश के Senior Citizens को, देश के मध्यम वर्गीय परिवार को एक नई ताकत दी है। जिस संयुक्तल परिवार में अगर किसी को एक डायबिटिज जैसा हो जाए 2–3 हजार का बिल स्वभाविक हो जाता है। हमने जन–औषधि केंद्र से जो दवाई बाजार में सौ रुपये में मिलती है वो 10 रुपया, 15 रुपया, 20 में दी। और आज देश के 1000 जन–औषधि केंद्रों से इन बीमारी में जिनको दवाई की जरूरत थी, ऐसे लोगों के करीब 20 करोड़ रुपया उनके जेब में बचा है। और ये ज्यादातर मध्यम वर्गीय परिवार के लोग हैं। लेकिन आज उसकी सफलता को देखते हुए मैं देशवासियों को कहना चाहता हूं जैसे हम एक विश्वकर्मा योजना लेकर के समाज के उस वर्ग को छूने वाले हैं। अब देश में 10 हजार जन–औषधि केंद्र से हम 25 हजार जन–औषधि केंद्र का लक्ष्य लेकर के आने वाले दिनों में काम करने वाले हैं।

जब देश में गरीबी कम होती है तब देश के मध्यम वर्गीय वर्ग की ताकत बहुत बढ़ती है। और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं आने वाले पांच साल में मोदी की गारंटी है, देश पहले तीन वैश्विक इकोनॉमी में अपनी जगह ले लेगा, ये पक्का जगह ले लेगा। आज जो साढ़े 13 करोड़ गरीबी से बाहर आए हुए लोग हैं वो एक प्रकार से मध्यम वर्गीय ताकत बन जाते हैं। जब गरीब की खरीद शक्ति बढ़ती है तो मध्यम वर्ग की व्यापार शक्ति बढ़ती है। जब गांव की खरीद शक्ति बढ़ती है, तो कस्बे और शहर की आर्थिक व्यवस्था और तेज गति से दौड़ती है। और यही इंटर कनेक्टेड हमारा अर्थ चक्र होता है। हम उसको बल देकर

के आगे चलना चाहते हैं।

सपने अनेक हैं, संकल्पी साफ है, नीतियाँ स्पष्ट हैं। नियत के सामने कोई सवालिया निशान नहीं है। लेकिन कुछ सच्चाईयों को हमें स्वीकार करना पड़ेगा और उसके समाधान के लिए मेरे प्रिय परिवारजनों, मैं आज लाल किले से आपकी मदद मांगने आया हूं, मैं लाल किले से आपका आर्शीवाद मांगने आया हूं। क्योंकि पिछले सालों मैंने देश को जो समझा है, देश की आवश्यकताओं को जो मैंने परखा है। और अनुभव के आधार पर मैं कह रहा हूं कि आज गंभीरतापूर्वक उन चीजों को हमें लेना होगा। आजादी के अमृतकाल में, 2047 में जब देश आजादी के 100 साल मनाएंगा, उस समय दुनिया में भारत का तिरंगा–झंडा विकसित भारत का तिरंगा–झंडा होना चाहिए, रत्ती भर भी हमें रुकना नहीं है, पीछे हटना नहीं है और इसके लिए सुचिता, पारदर्शिता और निष्पक्षता ये पहली मजबूती की जरूरत है। हमें उस मजबूती को जितना ज्यादा खाद पानी दे सकते हैं, संस्थाओं के माध्यम से दे सकते हैं, नागरिक के नाते दे सकते हैं, परिवार के नाते दे सकते हैं यह हमारा सामूहिक दायित्व होना चाहिए। और इसलिए पिछले 75 साल का इतिहास देखिए, भारत के सामर्थ्य में कोई कमी नहीं थी और यह जो देश कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था वो देश क्यों न फिर से उस सामर्थ्य को ले करके खड़ा हो सकता है। मेरा अटूट विश्वास है साथियों, मेरे प्रिय परिवारजनों, मेरा अखंड, अटूट, एक निष्ठ विश्वास है कि 2047 में जब देश आजादी के 100 साल मनाएगा मेरा देश विकसित भारत बनकर रहेगा। और यह मैं मेरे देश के सामर्थ्य के आधार पर कह रहा हूं। मेरे उपलब्ध संसाधनों के आधार पर कह रहा हूं और सबसे ज्यादा 30 से कम आयु वाली मेरी युवा शक्ति के भरोसे कह रहा हूं। मेरी माताओं–बहनों के सामर्थ्य के भरोसे कह रहा हूं, लेकिन उसके सामने अगर कोई रुकावट है, कुछ भी कृतियां पिछले 75 साल में ऐसे घर कर गई है, हमारी समाज व्यवस्था का ऐसा हिस्सां बन गई है कि कभी–कभी तो हम आंख भी बंद कर देते हैं। अब आंख बंद करने का समय नहीं है। अगर सपनों को सिद्ध करना है, संकल्प को पार करना है तो हमें यह आंख–मिचौली बंद करके आंख में आंख मिला करके तीन बुराईयों से लड़ना बहुत समय की मांग है। हमारे देश की सारी समस्याओं की जड़ में भ्रष्टाचार ने दीमक की तरह देश की सारी व्यवस्थाओं को, देश के सारे सामर्थ्य को पूरी तरह नोंच लिया है। भ्रष्टाचार से मुक्ति, भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग हर ईकाई में हर क्षेत्र में और मैं देशवासियों, मेरे प्रिय परिवारजनों, यह मोदी के जीवन का कमिटमेंट है, यह मेरे व्यक्तित्व का एक कमिटमेंट है कि मैं भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ता रहूंगा। दूसरा हमारे देश को नोंच लिया है परिवारवाद ने। इस परिवारवाद ने देश को जिस प्रकार से जकड़ करके रखा है उसने देश के लोगों का हक छीना है, और तीसरी बुराई तुष्टिकरण की है। यह तुष्टिकरण में भी देश के मूल चिंतन को, देश के सर्वसमावेशक हमारे राष्ट्रीय चरित्र को दाग लगा दिए हैं। तहस–नहस कर दिया इन लोगों ने। और इसलिए मेरे प्यारे देशवासियों, इसलिए मेरे प्यारे परिवारजनों हमें इन तीन बुराइयों के खिलाफ पूरे सामर्थ्य के साथ लड़ना है। भ्रष्टाचार, परिवारवाद, तुष्टिकरण यह चुनौतियां, ये ऐसी चीजें पनपी है जो हमारे देश के लोगों का, जो आकांक्षाएं है, उसका दमन करती है। हमारे देश के कुछ लोगों के पास जो छोटा–मोटा सामर्थ्य है उसका शोषण करती है। यह ऐसी चीजें हैं, जो हमारे लोगों की आशाओं–आकांक्षाओं को सवाल या निशान में गढ़ देती है। हमारे गरीब हो, हमारी दलित हो, हमारे पिछड़े हो, हमारे पसमांदा हो, हमारे आदिवासी भाई–बहन हो, हमारी माताएं–बहनें हो, हमने सबने उनके हकों के लिए इन तीन बुराइयों से मुक्ति पानी है। हमें भ्रष्टाचार के खिलाफ एक नफरत का माहौल बनाना है। जैसे गंदगी हमें नफरत पैदा करती है न मन में, गंदगी पसंद नहीं है, यह सार्वजनिक जीवन की इससे बड़ी कोई गंदगी नहीं हो सकती। और इसलिए हमारे स्वच्छता अभियान को एक नया मोड़ ये भी देना है कि हमें भ्रष्टाचार से मुक्ति पानी है। सरकार टेक्नोलॉजी से भ्रष्टाचार की मुक्ति के लिए बहुत प्रयास कर रही है। आपको जान करे हैरानी होगी, इस देश में पिछले 9 साल में एक काम मैंने ऐसा किया; आंकड़ा सुनोगे तो लगेगा कि मोदी ऐसा करता है जैसे दस करोड़ लोग करीब–करीब जो गलत फायदा उठाते थे, वो मैंने रोक दिया। तो आप में से कोई कहेगा आपने लोगों से अन्यांय कर दिया; जी नहीं, ये दस करोड़ लोग कौन लोग थे, ये दस करोड़ लोग वो लोग थे, जिनका जन्म; ही नहीं हुआ था और उनके नाम पर उनके widow हो जाते थे, वो वृद्ध हो जाते थे, वो दिव्यांग हो जाते थे, फायदे लिए जाते थे। दस करोड़ ऐसी बेनामी चीजें जो चलती थीं, उसको रोकने का पवित्र काम, भ्रष्टाचारियों की संपत्ति जो हमने जब्तं की है ना, वो पहले की तुलना में 20 गुना ज्यादा की है।

हम सबका एक बहुत बड़ा महत्वपूर्ण दायित्व है, आपने जिस प्रकार से जिंदगी जी है, हमारी आने वाली पीढ़ी को ऐसी जिंदगी जीने के लिए मजबूर करना, ये हमारा गुनाह है, ये हमारा दायित्व है कि हमारी आने वाली पीढ़ी को हम ऐसा समृद्ध देश दें, ऐसा संतुलित देश दें, ऐसा सामाजिक न्याय की धरोहर वाला देश दें, ताकि छोटी–छोटी चीजों को पाने के लिए उन्हें कभी भी संघर्ष न करना पड़े। हम सभी का कर्तव्य, हर नागरिक कर्तव्य है और ये अमृतकाल

कर्तव्यकाल है। हम कर्तव्य से पीछे नहीं हो सकते हैं, हम वो भारत बनाना है, जो पूज्य बापू के सपनों का था, हमें वो भारत बनाना है जो हमारे स्वतंत्रता सेनानियों का सपना था, हमें वो भारत बनाना है जो हमारे वीर–शहीदों का था, हमारी वीरांगनाओं का था, जिन्होंने मात्रभूमि के लिए अपना जीवन दे दिया था। मैं जब 2014 में आपके पास आया था तब 2014 में मैं परिवर्तन का वादा लेकर के आया था। 2014 में मैंने आपको वादा किया था मैं परिवर्तन लाऊंगा। और 140 करोड़ मेरे परिवारजन आपने मुझ पर भरोसा किया और मैंने विश्वास पूरा करने की कोशिश की। Reform, Perform, Transform वो 5 साल जो वादा था वो विश्वास में बदल गया क्योंकि मैंने परिवर्तन का वादा किया था। Reform, Perform, Transform के द्वारा मैंने इस वादे को विश्वास में बदल दिया है। कठोर परिश्रम किया है, देश के लिए किया है, शान से किया है, सिर्फ और सिर्फ nation first राष्ट्र सर्वोपरि इस भाव से किया है। 2019 में performance के आधार पर आप सबने मुझे फिर से आशीर्वाद दिया। परिवर्तन का वादा मुझे यहां ले आया, performance मुझे दोबारा ले आया और आने वाले 5 साल अभूतपूर्व विकास के हैं। 2047 के सपने को साकार करने का सबसे बड़ा स्वर्णीम पल आने वाले 5 साल हैं। और अगली बार 15 अगस्त को इसी लाल किले से मैं आपको देश की उपलब्धियां, आपके समार्थ्य, आपके संकल्प उसमें हुई प्रगति, उसकी जो सफलता है, उसके गौरवगान उससे भी अधिक आत्मविश्वास के साथ, आपके सामने में प्रस्तुत करूंगा। मैं आप में से आता हूं, मैं आपके बीच से निकला हूं, मैं आपके लिए जीता हूं। अगर मुझे सपना भी आता है, तो आपके लिए आता है। अगर मैं पसीना भी बहाता हूं तो आपके लिए बहाता हूं, क्योंकि इसलिए नहीं कि आपने मुझे दायित्व दिया है, मैं इसलिए कर रहा हूं कि आप मेरे परिवाजन हैं और आपके परिवार के सदस्य के नाते मैं आपके किसी दुःख को देख नहीं सकता हूँ, मैं आपके सपनों को चूर–चूर होते नहीं देख सकता हूं। मैं आपके संकल्प को सिद्धी तक ले जाने के लिए आपका एक साथी बनकर के, आपका एक सेवक बनकर के, आपके साथ जुड़े रहने का, आपके साथ जीने का, आपके लिए जूझने का मैं संकल्प लेकर के चला हुआ इंसान हूं और मुझे विश्वास है हमारे पूर्वजों ने आजादी के लिए जो जंग लड़ा था, जो सपने देखे थे, वो सपने हमारे साथ हैं। आजादी के जंग में जिन्होंने बलिदान दिया था, उनके आशीर्वाद हमारे साथ हैं और 140 करोड़ देशवासियों के लिए एक ऐसा अवसर आया है, ये अवसर हमारे लिए एक बहुत बड़ा संबल लेकर के आया है।

आज जब मैं अमृतकाल में आपके साथ बात कर रहा हूं, ये अमृतकाल का पहला वर्ष है, ये अमृतकाल के पहले वर्ष पर जब मैं आपके बात कर रहा हूं तो मैं आपको पूरे विश्वास से कहना चाहता हूं–

चलता चलाता कालचक्र,
अमृतकाल का भालचक्र,
सबके सपने, अपने सपने,
पनपे सपने सारे, धीर चले, वीर चले, चले युवा हमारे,
नीति सही रीती नई, गति सही राह नई,
चुनो चुनौती सीना तान, जग में बढ़ाओ देश का नाम।

हिन्दुस्तान के कोने–कोने में बैठे हुए मेरे परिवारजनों, दुनिया के कोने–कोने में जा करके बसे हुए मेरे परिवारजन, आप सबको आजादी के पावन पर्व की फिर एक बार मैं बहुत–बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। और ये अमृतकाल हम सबके लिए कर्तव्य काल है। ये अमृतकाल हम सबको मां भारती के लिए कुछ कर गुजरने का काल है। आजादी का जब जंग चल रहा था, 1947 के पहले जो पीढ़ी ने जन्म लिया था, उन्हें देश के लिए मरने का मौका मिला था। वो देश के लिए मरने के लिए मौका नहीं छोड़ते थे लेकिन हमारे नसीब में देश के लिए मरने का मौका नहीं है। लेकिन हमारे लिए देश के लिए जीने का ये इससे बड़ा कोई अवसर नहीं हो सकता। हमें पल–पल देश के लिए जीना है, इसी संकल्प के साथ इस अमृत काल में 140 करोड़ देशवासियों के सपने संकल्प भी बनाने हैं। 140 करोड़ देशवासियों के संकल्पी को सिद्धि में भी परिवर्तित करना है और 2047 का जब तिरंगा झंडा फहरेगा, तब विश्व एक विकसित भारत का गुणगान करता होगा। इसी विश्वास के साथ, इसी संकल्प के साथ मैं आप सबको अनेक–अनेक शुभकामनाएं देता हूँ। बहुत–बहुत बधाई देता हूँ।

धरती को माँ के रूप में सम्मान : योगी

स्वतंत्रता दिवस हम सबको स्वतंत्र भारत की रक्षा, देश की आंतरिक सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने तथा अपने कर्तव्यों के लिए बलिदान होने वाले भारत माता के वीर सपूतों तथा महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का एक अवसर है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस हम सबको स्वतंत्र भारत की रक्षा, देश की आंतरिक सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने तथा अपने कर्तव्यों के लिए बलिदान होने वाले भारत माता के वीर सपूतों तथा महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का एक अवसर है। आज पूरा देश आजादी की 77वीं वर्षगांठ मना रहा है। यह आजादी के अमृत काल का प्रथम आयोजन है।

मुख्यमंत्री जी 77वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आज यहां विधान भवन के समक्ष ध्वजारोहण करने के बाद अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। मुख्यमंत्री जी ने सभी को पंचप्रण की शपथ दिलायी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री जी ने प्रदेश पुलिस बल के 05 पुलिस अधिकारियों/कर्मियों श्री शैलेष पाण्डेय, श्री विशाल विक्रम सिंह, श्री विशाल सांगरी, श्री मनोज कुमार तथा सुश्री शैलेष कुन्तल को मुख्यमंत्री उत्कृष्ट सेवा पदक प्रदान करने की घोषणा की। कीर्ति चक्र से अलंकृत मेजर अशोक कुमार सिंह, शौर्य चक्र से अलंकृत कर्नल भरत सिंह, मेजर अरुण कुमार पाण्डेय, ले0 कर्नल अमित मोहिन्द्रा, ब्रिगेडियर सै0 अली उस्मान के साथ–साथ शौर्य चक्र से अलंकृत शहीद कर्नल मुनींद्र नाथ राय, शहीद ले0 हरि सिंह बिष्ट, वीर चक्र से अलंकृत शहीद हवलदार कुंवर सिंह चौधरी, शहीद नायक राजा सिंह तथा शहीद एन0सी(ई) पुताली के परिजनों को सम्मानित किया।

12 मार्च, 2021 से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने आजादी के अमृत महोत्सव का शुभारम्भ गुजरात की साबरमती नदी के तट पर एक नए संकल्प, उत्साह तथा उमंग के साथ किया था। 75 सप्ताह के अनेक कार्यक्रमों से जुड़ा यह आयोजन अपने समापन की ओर है, वहीं आगामी 25 वर्षों के अमृतकाल की एक नई कार्ययोजना का भी आह्वान कर रहा है। 25 वर्षों के बाद जब देश आजादी का शताब्दी महोत्सव मना रहा होगा, तब हमें कैसा भारत चाहिए। उस भारत के सपने को साकार करने के लिए नए भारत के संकल्प के साथ आज हम सभी स्वतंत्रता दिवस के पावन आयोजन के साथ जुड़े हैं।

अमृत काल का यह प्रथम वर्ष हम सबको आगामी 25 वर्षों की कार्य योजना के साथ जोड़ता है। जब 2047 में भारत अपनी आजादी का शताब्दी महोत्सव मना रहा होगा, तब हम में से हर व्यक्ति गौरव की अनुभूति करेगा कि इन संकल्पों के निर्माण में वे भी किसी न किसी रूप में जुड़े थे। उस समय की पीढ़ी आगामी 100 वर्षों की कार्य योजना बनाएगी और दुनिया की सबसे बड़ी ताकत के रूप में भारत को स्थापित करने के संकल्प के साथ जुड़ेगी। इसी से हजारों वर्षों की भारत की यह यात्रा आगामी हजार वर्षों की कार्य योजना के साथ आगे बढ़ पाएगी, इसमें कोई संदेह नहीं हैं। हर घर तिरंगा कार्यक्रम के माध्यम से आज उत्तर प्रदेश के करोड़ों घरों में तिरंगा अपनी आन–बान–शान के साथ लहराता दिखाई दे रहा है। भारत के गौरव का प्रतीक तिरंगा देश के वीर शहीदों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का अवसर सभी को प्रदान कर रहा है।

आज यहां प्रदेश के संस्कृति विभाग के द्वारा 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की थीम पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इसमें उत्तर प्रदेश के साथ ही देश के अन्य क्षेत्रों से आए कलाकारों ने प्रधानमंत्री जी के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के संकल्प के साथ जुड़ते हुए लघु झांकी प्रस्तुत की। इसे वास्तविक और व्यवहारिक धरातल पर उतारने के लिए हम सभी को जुड़ना होगा। देश की सुरक्षा के लिए अपना बलिदान देने वाले वीरों के परिजनों तथा विभिन्न युद्धों में अपनी वीरता का परिचय देने वाले वीरों का आज यहां सम्मान किया गया है। इस प्रकार के आयोजन आज पूरे देश

में हो रहे हैं। उत्तर प्रदेश के सभी 75 जनपदों की 58 हजार ग्राम पंचायतों तथा 762 नगर निकायों में यह आयोजन सम्पन्न हो रहे हैं। हर व्यक्ति के मन में यह अनुभूति है कि यदि उन्होंने अपने कर्तव्य का निर्वहन किया तो हमारी भावी पीढ़ी उनका सम्मान करेगी।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि आज हम सब नए भारत का दर्शन कर रहे हैं। हमारे संस्कार हमें सदैव से 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' के भाव से जोड़ते रहे हैं। हमने कभी भी धरती को जमीन का टुकड़ा ही नहीं माना बल्कि, धरती को अपनी मां के रूप में सम्मान दिया है। इस रूप में धरती के प्रति जो भी अभीष्ट है तथा जो कुछ भी अच्छा है, वह कर गुजरने की तमन्ना के साथ हर भारतवासी कार्य करता है। यही कारण है कि हजारों–हजार वर्ष की इस विरासत पर हम गौरव की अनुभूति करते हैं, इन कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने में हर भारतवासी को गौरव की अनुभूति होती है।

यही कारण है कि भारत में अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं। रूप, रंग, वेश–भूषा, खान–पान सब कुछ अलग होते हुए भी भारत और अपनी मातृभूमि के प्रति हमारी भाव–भंगिमाएं एक जैसी हैं। कोई हमें अलग नहीं कर सकता है। भारतवासी उत्तर का हो या दक्षिण का, वह पूरब का हो या पश्चिम का, वह किसी भी जाति, मत, मजहब अथवा उपासना पद्धति का हो, वह सबसे पहले भारत माता को सर्वोपरि मानकर कार्य करता है। इसी भाव के साथ जब तमिलनाडु में जन्मा एक जवान भारत की उत्तर सीमा की रक्षा करते हुए बलिदान होता है, तो उसे गौरव की अनुभूति होती है। देश के किसी भी कोने में कोई भी उपद्रव होने पर भारत के किसी भी अन्य कोने का जवान उस उपद्रव को समाप्त करने के लिए अपना बलिदान देने में कोई संकोच नहीं करता है।

रूप, रंग, वेश–भूषा, खान–पान सब कुछ अलग होते हुए भी भारत और अपनी मातृभूमि के प्रति हमारी भाव–भंगिमाएं एक जैसी हैं। कोई हमें अलग नहीं कर सकता है।

हजारों वर्ष पहले केरल में जन्मे एक संन्यासी आदि शंकराचार्य ने भारत के चार कोनों में चार पीठों की स्थापना की। यह भारत की उस सांस्कृतिक एकता के दर्शन हम सबको कराता है, जिसके बारे में प्रधानमंत्री जी ने कहा है कि हमें विरासत पर गौरव की अनुभूति होनी चाहिए। विरासत की रक्षा करना हर भारतवासी का दायित्व है। प्रधानमंत्री जी ने जिन पंचप्रण की बात की है, उसकी अंतर्निहित ताकत नागरिक कर्तव्य है, अर्थात जो व्यक्ति जिस क्षेत्र में है, वह अपने दायित्वों का ईमानदारी पूर्वक निर्वहन करें।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि भारत अपनी आजादी के अमृत काल के प्रथम वर्ष में दुनिया की 5वीं बड़ी अर्थव्यवस्था बना है। भारत जी–20 देशों के समूह की अध्यक्षता कर रहा है। इन देशों में दुनिया की 65 फीसदी आबादी निवास करती है। दुनिया के 80 प्रतिशत संसाधनों, 85 प्रतिशत जी0डी0पी0 तथा 90 प्रतिशत से अधिक पेटेंट पर जी–20 के देशों का अधिकार है। दुनिया का हर विकसित देश इस समूह से जुड़ा है। यह हर भारतवासी के लिए गौरव की अनुभूति करने का अवसर है कि अमृत काल के प्रथम वर्ष में भारत प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में जी–20 के देशों की अध्यक्षता कर रहा है। पूरे देश में जी–20 से जुड़े अलग–अलग सम्मेलन आयोजित हो रहे हैं। उत्तर प्रदेश में भी जी–20 के 11 सम्मेलन प्रदेश की राजधानी लखनऊ, देश की सांस्कृतिक राजधानी वाराणसी, आगरा तथा गौतमबुद्धनगर जनपद में आयोजित हो रहे हैं। जी–20 के माध्यम से भारत को वैश्विक मंच पर अपनी प्रतिभा को बिखरने का अवसर मिला है। यह नया भारत हम सबको उस दिशा में आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित कर रहा है। विगत 09 वर्षों में भारत ने जो यात्रा प्रारंभ की है वह हर भारतवासी को विकसित भारत के संकल्प के साथ जोड़ती है। भारत ने इन्फ्रास्ट्रक्चर, आंतरिक सुरक्षा, वाह्य सुरक्षा, विरासत पर गौरव की अनुभूति करने, गरीब कल्याणकारी कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के साथ ही अलग–अलग क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की है। भारत की इस प्रगति के अनुरूप जिस राज्य की सर्वाधिक भूमिका हो सकती है वह राज्य उत्तर प्रदेश है। हमें गौरव की अनुभूति होनी चाहिए कि हम उत्तर प्रदेश के वासी हैं। हम भी भारत को दुनिया की एक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए अपने स्तर पर प्रयास कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री जी ने कहा की विगत 06 वर्षों में उत्तर प्रदेश ने प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में जिस यात्रा को प्रारम्भ किया है, वह सबके सामने है। अब हमारे सामने पहचान का संकट नहीं है। देश की भावनाओं के अनुरूप प्रदेश की जो पहचान

होनी चाहिए, वह उसे मिल रही है। आज हम गर्व से कह सकते हैं कि हम उस उत्तर प्रदेश के निवासी हैं, जहां भारत की आत्मा बसती है। इसके लिए परिश्रम की नई पराकाष्ठा के साथ आगे बढ़ना पड़ता है। ईमानदारी के साथ प्रक्रियाओं को जोड़कर कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया जाता है। इसी का परिणाम आज हमें देखने को मिल रहा है। आज प्रदेश में बेहतर कानून व्यवस्था की स्थिति से उत्तर प्रदेश का परसेप्शन बदला है। उत्तर प्रदेश में सुरक्षा का बेहतर माहौल देने के लिए पुलिस के वीर जवानों ने अपना योगदान दिया है। प्रदेश की सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था के साथ किसी को खिलवाड़ करने की इजाजत नहीं दी गयी है। उन्होंने कर्तव्यपालन में शहीद हुए जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की। उत्तर प्रदेश में कानून–व्यवस्था की बेहतर स्थिति का परिणाम है कि प्रदेश के प्रमुख धर्म स्थलों पर पर्यटकों की संख्या बढ़ी है। काशी एक नई काशी के रूप में दुनिया को आकर्षित कर रही है। गत वर्ष वाराणसी में 10 करोड़ श्रद्धालु दर्शन करने के लिए आए। यहां देश व दुनिया में सर्वाधिक श्रद्धालुओं की संख्या का एक नया रिकॉर्ड बना है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि उत्तर प्रदेश कृषि बाहुल्य राज्य है। यह राज्य में सर्वाधिक रोजगार देने वाला क्षेत्र था, लेकिन उपेक्षा के कारण धीरे–धीरे कृषि से लोग पलायन करने लगे थे। किसानों को समृद्धशाली बनाने के लिए प्रदेश में खेती से पलायन कर रहे किसानों को विगत 06 वर्षों में अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से फिर से खेती–बाड़ी के साथ जोड़ा गया है। स्वॉयल हेल्थ कार्ड, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना को प्रदेश में लागू किया गया है।

वर्ष 2017 के बाद प्रदेश सरकार ने अन्नदाता किसानों के लिए प्रोक्योरमेंट नीति लागू की, उन्हें लागत का डेढ़ गुना एम0एस0पी0 उपलब्ध कराया गया। फसलों के विविधीकरण कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया गया। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के माध्यम से उत्तर प्रदेश के 02 करोड़ 61 लाख किसानों के खातों में विगत 03 वर्षों में 59 करोड़ रुपये से अधिक की धनराशि डी0बी0टी0 के माध्यम से उपलब्ध कराई गई है। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के माध्यम से अब तक 23 लाख हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि को सिंचाई की सुविधा मिली है। हमें नए भारत के साथ जुड़ना है। प्रधानमंत्री जी ने देशवासियों को वर्ष 2027 तक भारत को दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करने का संकल्प दिया है। उत्तर प्रदेश में देश की आबादी का लगभग 5वां भाग निवास करता है। ऐसे में प्रदेश का दायित्व बड़ा है। उत्तर प्रदेश कृषि के क्षेत्र में इस दायित्व को अपने अन्नदाता किसानों के माध्यम से पूरा कर रहा है। उत्तर प्रदेश में देश की 11 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि है, इसी भूमि से राज्य देश के कुल खाद्यान्न उत्पादन का 20 प्रतिशत खाद्यान्न उत्पादित करता है। इसे और बढ़ाने की सम्भावनाएं उत्तर प्रदेश में मौजूद है, जिस पर निरतं र कार्य हो रहा है।

उत्तर प्रदेश की जी0डी0पी0 तथा प्रति व्यक्ति आय को विगत 06 वर्षों में लगभग दुगना करने में सफलता प्राप्त हुई है, वह भी ऐसे समय में जब कोरोना महामारी हमारे सामने चुनौती के रूप में खड़ी थी। अगले 05 वर्षों में उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को चार गुना करने का लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में हम कार्य करेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। भारत दुनिया का सबसे युवा राष्ट्र है, भारत में उत्तर प्रदेश सबसे युवा प्रदेश है। उत्तर प्रदेश की 56 प्रतिशत आबादी कामकाजी है। इसके परिश्रम और पुरुषार्थ पर हमें गर्व की अनुभूति करनी होगी। इन्हें अवसर उपलब्ध कराना होगा। इस दृष्टि से उत्तर प्रदेश सरकार आगामी 05 वर्षों की एक व्यापक कार्य योजना को लेकर आगे बढ़ी हैं। भारत को 05 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करना है तो उत्तर प्रदेश को अपने आपको एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करना होगा। इसके लिए विगत 06 वर्षों में प्रदेश सरकार ने संकल्प लिए हैं।

हम सबको आज इन संकल्पों से जुड़ने का कार्य करना होगा। पंचप्रण में विकसित भारत का निर्माण, विरासत का सम्मान, गुलामी के हर अंश से मुक्ति तथा एकता और एकीकरण हम सब का संकल्प होना चाहिए। इन सभी की अंतर्निहित आत्मा है 'हर नागरिक का कर्तव्य'। सभी नागरिक अपना कर्तव्य ईमानदारीपूर्वक करते हुए आगे बढ़े तो वर्ष 2027 में उत्तर प्रदेश 01 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन सकता है और भारत 05 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनते हुए दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित हो जाएगा। प्रदेशवासियों से अमृत कल के प्रथम वर्ष में नए संकल्पों के साथ जुड़कर एक समृद्ध और सुरक्षित उत्तर प्रदेश के निर्माण में अपना योगदान देने का आह्वान किया।

इस अवसर पर विधान परिषद सभापति श्री कुंवर मानवेन्द्र सिंह, उप मुख्यमंत्री श्री ब्रजेश पाठक तथा अन्य जनप्रतिनिधिगण, मुख्य सचिव श्री दुर्गा शंकर मिश्र, पुलिस महानिदेशक श्री विजय कुमार, सलाहकार मुख्यमंत्री श्री अवनीश कुमार अवस्थी, अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास आयुक्त श्री मनोज कुमार सिंह, अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री श्री एस0पी0 गोयल, अपर मुख्य सचिव कृषि श्री देवेश चतुर्वेदी, अपर मुख्य सचिव ऊर्जा श्री महेश गुप्ता, प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री, गृह एवं सूचना श्री संजय प्रसाद, लखनऊ की मण्डलायुक्त श्रीमती रोशन जैकब, सूचना निदेशक श्री शिशिर, अपर सूचना निदेशक श्री अंशुमान

विकसित भारत का शंखनाद : नरेन्द्र

एक भारत, श्रेष्ठ भारत में नये भारत के वैज्ञानिकों द्वारा चन्द्रयान–3 की सफलता पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश को सम्बोधित करते हुए कहा कि

मेरे प्यारे परिवारजनों,

जब हम अपनी आंखों के सामने ऐसा इतिहास बनते हुए देखते हैं, तो जीवन धन्य हो जाता है। ऐसी ऐतिहासिक घटनाएं, राष्ट्र जीवन की चिरिंजीव चेतना बन जाती हैं। ये पल अविस्मरणीय है। ये क्षण अभूतपूर्व है। ये क्षण, विकसित भारत के शंखनाद का है। ये क्षण, नए भारत के जयघोष का है। ये क्षण, मुश्किलों के महासागर को पार करने का है। ये क्षण, जीत के चंद्रपथ पर चलने का है। ये क्षण, 140 करोड़ धड़कनों के सामर्थ्य का है। ये क्षण, भारत में नई ऊर्जा, नया विश्वास, नई चेतना का है। ये क्षण, भारत के उदयीमान भाग्य के आह्वान का है। अमृतकाल की प्रथम प्रभा में सफलता की ये अमृतवर्षा हुई है। हमने धरती पर संकल्प लिया, और चाँद पर उसे साकार किया। और हमारे वैज्ञानिक साथियों ने भी कहा कि India is now on the moon- आज हम अन्तरिक्ष में नए भारत की नई उड़ान के साक्षी बने हैं।

मेरे परिवारजनों,

हमारे वैज्ञानिकों के परिश्रम और प्रतिभा से भारत, चंद्रमा के उस दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचा है, जहां आज तक दुनिया का कोई भी देश नहीं पहुंच सका है। अब आज के बाद से चाँद से जुड़े मिथक बदल जाएंगे, कथानक भी बदल जाएंगे, और नई पीढ़ी के लिए कहावतें भी बदल जाएंगी। भारत में तो हम सभी लोग धरती को माँ कहते हैं और चाँद को मामा बुलाते हैं। कभी कहा जाता था, चंदा मामा बहुत 'दूर' के हैं। अब एक दिन वो भी आएगा जब बच्चे कहा करेंगे– चंदा मामा बस एक 'टूर' के हैं।

मेरे परिवारजनों,

चंद्रयान महाअभियान की ये उपलब्धि, भारत की उड़ान को चन्द्रमा की कक्षाओं से आगे ले जाएगी। हम हमारे सौरमण्डल की सीमाओं का सामर्थ्य परखेंगे, और मानव के लिए ब्रह्मांड की अनंत संभावनाओं को साकार करने के लिए भी जरुर काम करेंगे। हमने भविष्य के लिए कई बड़े और महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय किए हैं। जल्द ही, सूर्य के विस्तृत अध्ययन के लिए इसरो 'आदित्य L–1* मिशन लॉच करने जा रहा है। इसके बाद शुक्र भी इसरो के लक्ष्यों में से एक है। गगनयान के जरिए देश अपने पहले human Lisl फ्लाइट मिशन के लिए भी पूरी तैयारी के साथ जुटा है। भारत बार–बार ये साबित कर रहा कि sky is not the limit-

साथियों,

साइंस और टेक्नोलॉजी, देश के उज्ज्वल भविष्य का आधार है। इसलिए आज के इस दिन को देश हमेशा–हमेशा के लिए याद रखेगा। यह दिन हम सभी को एक उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। ये दिन हमें अपने संकल्पों की सिद्धि का रास्ता दिखाएगा। ये दिन, इस बात का प्रतीक है कि हार से सबक लेकर जीत कैसे हासिल की जाती है। एक बार फिर देश के सभी वैज्ञानिकों को बहुत–बहुत बधाई और भविष्य के मिशन के लिए ढेरों शुभकामनाएं! बहुत बहुत धन्यवाद।

भारत आनन्द मगन

हृदयनारायण दीक्षित

भारत में उत्सव का माहौल है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने कामयाबी का नया गीत लिखा है। भारत चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर चन्द्रयान उतारने वाला पहला देश बन गया है। अभी पिछले सप्ताह रूस का लूना 25 असफल होकर गिर गया था। भारत ने उसी स्थान पर चन्द्रयान उतारने की सफलता पाई है। ये बड़ी सफलता है। राष्ट्रीय प्रसन्नता के अनेक अवसर आते जाते रहते हैं। वैसे भी भारत उत्सव प्रिय राष्ट्र है। लेकिन जैसा राष्ट्रीय उल्लास चन्द्रयान की सफलता को लेकर प्रत्यक्ष हुआ है वैसा किसी अन्य अवसर को लेकर प्रायः नहीं हुआ। भारतीय राष्ट्रभाव मुद मोद प्रमोद के साथ प्रकट हुआ है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में यह एक बड़ी उपलब्धि है। ये और खुशी की बात है कि चन्द्रयान की तरह सूर्य अभियान की घोषणा भी हो गई है। इसरो सूर्य को लेकर 'आदित्य एल 1' मिशन लांच करने जा रहा है। बताया गया है कि शुक्र भी इसरो के लक्ष्यों में सम्मिलित है। भारत आनंदमगन है। सारी दुनिया भारत की ओर देख रही है। दर्शन और अनूठी संस्कृति के लिए विश्वविख्यात भारत अंतरिक्ष विज्ञान में भी पंख फैला कर उड़ रहा है। अंतरिक्ष की हलचल भारत में हजारों वर्ष पहले से पूर्वजों की जिज्ञासा रही है। वैदिककाल में भी सूर्य, पृथ्वी, सोम, मंगल, बुद्ध, बृहस्पति, शुक्र और शनि जैसे ग्रह वैदिक ऋषियों की जिज्ञासा रहे हैं। इनकी गति के विज्ञान से ही ज्योतिर्विज्ञान का विकास हुआ।

भारतीय चिंतन में सूर्य ब्रह्माण्ड की आत्मा हैं। वे प्रतिष्ठित वैदिक देवता हैं। सूर्य संचरण करते प्रतीत होते हैं। वस्तुतः पृथ्वी ही सूर्य की परिक्रमा करती है। आर्य भट्ट ने आर्यभट्टीयम में लिखा है, ''जिस तरह नाव में बैठा व्यक्ति नदी को चलता हुआ अनुभव करता है, उसी प्रकार पृथ्वी से सूर्य गतिशील दिखाई पड़ता है।'' सूर्य धनु राशि के बाद मकर राशि में प्रवेश करते हैं तो इसे मकर संक्रान्ति कहा जाता है। सूर्य का मकर राशि पर होना उपासना के लिए सुन्दर मुहूर्त माना जाता है। वराहमिहिर ने बृहत संहिता में बताया है, ''मकर राशि के आदि से उत्तरायण प्रारम्भ होता है।'' गीता (8–24) में कहते हैं, ''अग्नि ज्योति के प्रकाश में शुक्ल पक्ष सूर्य के उत्तरायण रहने वाले 6 माहों में शरीर त्याग कर ब्रह्म को प्राप्त करते हैं।'' उत्तरायण शुभ काल है।

ऋग्वेद से लेकर उपनिषदों, महाकाव्यों और परवर्ती साहित्य में सूर्यदेव की चर्चा है। प्रश्नोपनिषद (1–5) में कहते हैं कि, ''आदित्य ही प्राण हैं।'' छान्दोग्य उपनिषद में कहते हैं, "जैसे मनुष्यों में प्राण महत्वपूर्ण हैं वैसे ही ब्रह्माण्ड में सूर्य हैं।" सूर्य के कारण इस पृथ्वी ग्रह पर मनुष्य का जीवन है। सूर्य दिव्य हैं। तेजोमय दिव्यता हैं। सूर्य ऊष्मा ऊर्जा व प्रकाश का अक्षय भण्डार हैं। प्रत्येक ताप का ईंधन होता है। इसी तरह सूर्य ताप के पीछे भी कोई कारण/ईंधन होना चाहिए। सूर्यदेव अरबों वर्ष से तप रहे हैं। उनका ईंधन अक्षय है। इसरो के प्रस्तावित सूर्य अभियान से इस तरह के तमाम रहस्यों का अनावरण संभावित है।

सूर्य अजर अमर हैं। सभी प्राणी सूर्य पर निर्भर हैं। ऋग्वेद के दसवें मण्डल के सूक्त 36 के देवता विश्वदेवा हैं। इस सूक्त में ऋषि अपने यज्ञ में ऊषा और रात्रि देवी का आवाहन करते हैं। पृथ्वी अंतरिक्ष और समस्त देवलोक को निमंत्रण देते हैं। वे वरुण, इन्द्र, मरुत और जल को भी आहूत करते हैं। वे इन्द्र से संरक्षण, मरुतों से समृद्धि की कामना करते हैं और अंत में सूर्य सविता देव का स्मरण करते हैं। सूक्त का अंतिम मंत्र बड़ा प्यारा है। ऋषि

कहते हैं, ''सविता पश्चातात सविता – सविता पीछे हैं।'' फिर कहते हैं,''पुरस्तात सवितोतर सविता धरातात – सविता सामने हैं। ऊपर हैं। नीचे हैं। ये सविता हमें सुख व समृद्धि दें। दीर्घायु भी दें।'' सविता सूर्य की उपस्थिति दशों दिशाओं में है।

हम सब सूर्य परिवार के अंग हैं। सूर्य अभिभावक हैं। वे पृथ्वी पर रहने वाली अपनी संतति, प्राणी, नदियों, समुद्र और वनस्पतियों का कुशलक्षेम जानने के लिए प्रतिदिन उदित होते हैं। वे रथ पर चलते चित्रित हैं। ऋग्वेद के प्रथम मण्डल (सूक्त 164) के प्रथम मंत्र में सूर्यदेव के तीन भाई बताए गए हैं। उनके सात पुत्र हैं। तीन भाइयों में वे स्वयं, दूसरे सर्वव्यापी वायु और तीसरे तेजस्वी अग्नि। ऋषि सूर्य के रथ का सुन्दर वर्णन करते हैं, ''सूर्य के एक चक्र वाले रथ में सात घोड़े हैं। सात नामों वाला एक घोड़ा रथ खींचता है।'' आगे सात शब्द का दोहराव है, ''सात दिन, सात अश्व, सात स्वरों में सविता सूर्य की स्तुति करती सात बहनें।''

वैदिक देव परिवार में सूर्य महत्वपूर्ण हैं। ऋग्वेद में सविता की स्तुति में 11 सूक्त हैं। 170 से ज्यादा स्थलों पर सविता का उल्लेख है। सूर्य देवता के लिए अलग से 10 सूक्त हैं।

वैसे भी सूर्य प्रकाश में सात रंग हैं। ध्वनि में सात स्वर हैं। सप्ताह में सात दिन हैं। इसके बाद ऋषि जिज्ञासा है, "इस ब्रह्माण्ड में सबसे पहले जन्म लेने वाले को किसने देखा? जो अस्थि रहित होकर भी सम्पूर्ण संसार का पोषण करते हैं।"

ऋषि की वैज्ञानिक जिज्ञासा है। वे सविता सूर्य की आतंरिक गतिविधि जानना चाहते हैं, ''यह विज्ञ सप्त तंतुओं – किरणों को कैसे फैलाते हैं।'' ऋषि विनम्रतापूर्वक जानकारी की सीमा बताते हैं, "मैं नहीं जानता लेकिन जानना चाहता हूँ। सभी लोकों को स्थिर करने वाले अजन्मा का रूप क्या है? जो सूर्य रहस्य के जानकार हैं, कृपया वे बताएं।" अंत में कहते हैं, ''बारह अरों वाला चक्र द्युलोक में घूमता रहता है। वह अजर अमर है।" सूर्य के प्रति भारतीय चिंतन में अतिरिक्त श्रद्धा है। सूर्य संरक्षक हैं। गीता (4–1) में ज्ञान परंपरा है। श्रीकृष्ण कहते हैं, ''मैंने योगविद्या का ज्ञान सबसे पहले विवस्वान सूर्य को दिया था। सूर्य ने मनु को और मनु ने इक्ष्वाकु को यही ज्ञान दिया।'' ऋग्वेद के एक मंत्र में मृत व्यक्ति से कहते हैं कि, ''अब तुम्हारी आँखें सूर्य से जा मिलें''। आँखों की ज्योति सूर्य की अनुकम्पा है। इसी तरह प्राणों के बारे में कहते हैं – अब तुम्हारे प्राण वायु में जा मिलें। वैदिक देव परिवार में सूर्य महत्वपूर्ण हैं। ऋग्वेद में सविता की स्तुति में 11 सूक्त हैं। 170 से ज्यादा स्थलों पर सविता का उल्लेख है। सूर्य देवता के लिए अलग से 10 सूक्त हैं। सूर्य प्रत्यक्ष देव हैं। सूर्य उपासना यूनान में भी थी। वैदिक मन्त्रों में सविता सूर्य और ऊषा अलग अलग स्तुतियां पाते हैं। लेकिन यथार्थ में वे एक ही सूर्य के भिन्न भिन्न आयाम हैं। डॉ० कपिल देव द्विवेदी ने "वैदिक देवताओं के आध्यात्मिक और वैज्ञानिक स्वरुप" में लिखा है कि "सविता ही सूर्य हैं। सविता का अर्थ प्रेरणा शक्ति देने वाला प्रेरक। गति देने वाला। सूर्य इस संसार को गति, प्रेरणा और प्रकाश देते हैं। इसलिए सूर्य को सविता कहते हैं।" विश्वविख्यात गायत्री मंत्र में भी सूर्य सविता की स्तुति है। ऋग्वेद (3–62–10) के अनुवाद में सातवलेकर कहते हैं, ''हम सविता देव के उस श्रेष्ठ वरण करने योग्य तेज का ध्यान करते हैं। वे सविता हमारी बुद्धियों को उत्तम मार्ग के लिए प्रेरित करें – तत्स वितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात।'' सविता का तेज वरण करने

विश्वगुरु का शिव–शक्ति उद्घोष

डॉ. दिलीप अग्निहोत्री

नए भारत की विकास यात्रा में चन्द्रयान का सफल अभियान भी शामिल हुआ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चंद्र के उस स्थल का शिव–शक्ति नामकरण किया। यह विश्वगुरु का उद्घोष है। जिसे दुनिया ने स्वीकार किया है। आत्मनिर्भर भारत का यह अभूतपूर्व अध्याय है। नरेंद्र मोदी सरकार के प्रयासों से संकल्प सिद्ध हो रहे हैं। इसके पहले करोना की दो वैक्सीन बना कर भारत ने अपनी प्रतिभा का दुनिया को प्रमाण दिया था। सैकड़ों देशों तक भारतीय वैक्सीन पहुंची थी। पिछले दिनों अमृत रेलवे–स्टेशन निर्माण कार्य का शुभारंभ हुआ था। डिजिटल अभियान में भारत की प्रगति शानदार है। यह सब अमृत काल की गरिमा बढ़ा रहे हैं। इसी अवधि में भारत जी ट्वेंटी का अध्यक्ष बना। दुनिया भारत के विचारों से परिचित हो रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस समय दक्षिण एशिया में है। उन्होंने चन्द्रयान की चन्द्र यात्रा का सजीव प्रसारण दक्षिण अफ्रीका से देखा। वहीं से राष्ट्र को संबोधित किया। कहा कि भारत की इस उपलब्धि से दुनिया भी लाभान्वित होगी। पहले अभियान की विफलता पर मोदी ने ही वैज्ञानिकों का हौसला बढ़ाया था।

उन्होंने कहा था कि हमारे संस्कार, हमारा चिंतन, हमारी सोच, इस बात से भरी पड़ी है, जो हमें कहते हैं– वयं अमृतस्य पुत्राः। हम अमृत की संतान हैं जिसके साथ अमरत्व जुड़ा हुआ रहता है। अमृत के संतान के लिए न कोई रुकावट है, ना हो कोई निराशा। हमें पीछे मुड़कर निराशा की तरफ नहीं देखना है, हमें सबक लेना है, सीखना है, आगे ही बढ़ते जाना है और लक्ष्य की प्राप्ति तक रुकना नहीं है। हम निश्चित रूप से सफल होंगे। मिशन के अगले प्रयास में भी और उसके बाद के हर प्रयास में कामयाबी हमारे साथ होगी। 21वीं सदी में भारत के सपनों और आकांक्षाओं को पूरा करने से पहले हमें कोई भी क्षणिक बाधा रोक नहीं सकती. उनका कथन सत्य साबित हुआ। सफ़लता पर मोदी ने देश के वैज्ञानिकों की जमकर तारीफ की है। चंद्रयान–3 की चांद पर सफलतापूर्वक लैंडिंग होते ही प्रधानमंत्री मोदी ने तिरंगा लहराया। कहा कि जब हम ऐसे ऐतिहासिक क्षण देखते हैं तो हमें बहुत गर्व होता है। ये नए भारत का सूर्योदय है। हमने धरती पर संकल्प किया और चांद पर उसे साकार किया। भारत अब चंद्रमा पर है। ये क्षण मुश्किलों के महासागर को पार करने जैसा है। ये क्षण जीत के चंद्रपथ पर चलने का है। ये क्षण 140 करोड़ धड़कनों के सामर्थ्य का है। ये भारत में नई ऊर्जा, नई चेतना का है। अमृतकाल की प्रथम प्रभा में सफलता की ये अमृतवर्षा हुई है। पीएम मोदी ने कहा कि हमने धरती पर संकल्प लिया और चांद पर उसे साकार किया। अब हम चांद पर हैं। जब हम अपनी आंखों के सामने इतिहास बनते देखते हैं तो जीवन धन्य हो जाता है। यह पल विकसित भारत के शंखनाद का है। इससे पहले कोई भी देश चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव तक नहीं पहुंचा है। हमारे वैज्ञानिकों की मेहनत से हम वहां तक पहुंचे हैं। भारत का सफल चंद्रमा मिशन अकेले भारत का नहीं है.यह सफलता पूरी मानवता की है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नए भारत का रोडमैप बनाया था। जिसमें भारत को विकसित देशों की श्रेणी में पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था.अंतरिक्ष क्षेत्र में क्षमता का वाणिज्यिक रूप से उपयोग के लिये न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड नाम से नए सार्वजनिक उपक्रम का गठन किया गया है, इसका मकसद इसरो के लाभ का पूरा उपयोग करना है.यह संकल्प सिद्ध हुआ. भारतीय चन्द्रयान सफ़लता के साथ चंद्रमा की सतह पर पहुँचा. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के न्यू इंडिया विजन में विकास और लोक कल्याण का समावेश है। भारत को विकसित बनाने का संकल्प है। संकल्प को सिद्ध करने की इच्छाशक्ति है। उनकी नौ वर्ष की यह यात्रा यही प्रमाणित करती है। भारत के वैज्ञानिकों ने दो–दो वैक्सीन का निर्माण करके दुनिया को चौका दिया था। दुनिया में भारत की प्रशंसा हो रही थी। ब्राजील के राष्ट्रपति ने तो हनुमान जी द्वारा संजीवनी लाने के प्रसंग

से इसकी तुलना की थी। सैकड़ों देश भारत से कोरोना लेने की लाइन में लग गए। लेकिन भारत का विपक्ष इस राष्ट्रीय गौरव से अलग रहा। उसके लिए यह भी मोदी विरोध का अवसर था। दूसरी तरफ विपक्ष के गठबंधन ने शब्दों के जुगाड़ से अपने लिए इंडिया नाम गढ़ लिया है। लेकिन उनकी कल्पना के इस इंडिया में विकास की कोई बात नहीं होती। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत विकसित बनने की दिशा में अग्रसर है। इसकी कार्ययोजना पर कार्य प्रगति पर है। इस नये भारत का रेलवे भी नया है, क्योंकि रेलवे में विकास की दृष्टि से भी नौ साल बेमिसाल हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा भी कि भारत विकसित होने के लक्ष्य की तरफ कदम बढ़ा रहा है। इसमें रेलवे का विकास का शामिल है। सरकार ने स्टेशनों को शहर और राज्यों की पहचान से जोड़ने के लिए वन स्टेशन,वन प्रॉडक्ट योजना भी शुरू की है। इससे पूरे इलाके के लोगों, कामगारों और कारीगरों को लाभ होगा। जिले की ब्रांडिंग भी अमृत रेलवे स्टेशन विरासत के प्रति गर्व की अनुभूति कराने वाले होंगे। इन स्टेशनों में देश की संस्कृति और स्थानीय विरासत की झलक दिखेगी। देश के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों और तीर्थ स्थानों को जोड़ने के लिए इन दिनों देश में भारत गौरव यात्रा ट्रेन और भारत गौरव टूरिस्ट ट्रेन भी चल रही है। रेलवे का कायाकल्प हो रहा है।

दुनिया में शांति और सौहार्द की अभिलाषा रखने वालों को भारतीय विरासत में ही समाधान दिखाई दे रहा है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी विश्व कल्याण के द्रष्टिगत दुनिया को भारतीय विरासत से परिचित करा रहे है। उनके प्रयासों से अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जा रहा है। योग प्रत्येक व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य हेतु बहुत उपयोगी है। नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ऐसे हो मानवीय तथ्यों को दुनिया में स्थापित कर रहा है। दुनिया में शांति और सौहार्द की अभिलाषा रखने वालों को भारतीय विरासत में ही समाधान दिखाई दे रहा है। अन्य कोई विकल्प है भी नहीं। यह विषय दुनिया को युद्द मुक्त करने तक ही सीमित नहीं है। भारत ने पृथ्वी सूक्त के माध्यम से मानवता को पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति संवर्धन का भी संदेश दिया। कोरोना काल में भारतीय जीवन–शैली और आयुर्वेदिक को दुनिया में पुनः प्रतिष्ठित किया है। उस समय अपने को विकसित समझने वाले देश भी लाचार हो गए थे।

कुछ वर्ष पहले तक यह कल्पना भी मुश्किल थी कि भारत इस संगठन का अध्यक्ष होगा। आज यह सहज रूप में सम्भव हुआ है। नरेन्द्र मोदी ने इसे भारत के लिए एक बड़ा अवसर माना है। इसके माध्यम से वह विश्व कल्याण के तथ्यों लोगों को अवगत करा रहे हैं। शिखर सम्मेलन का लोगो अपने में एक विचार को अभिव्यक्त करने वाला है। नरेन्द्र मोदी ने भारत की मेजबानी में अगले वर्ष आयोजित होने वाली शिखर वार्ता का प्रतीक चिन्ह, मुख्य वाक्य और वेबसाइट का अनावरण किया। विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्था वाले देशों के मंच की शिखर वार्ता भारत में पहली बार आयोजित होगी। इसके प्रतीक चिन्ह में सात पंखुड़ियों वाले कमल के फूल पर गोलाकार विश्व स्थित है। इसके नीचे भारतीय संस्कृति का प्रसिद्ध ध्येय वाक्य 'वसुधैव अंकित है। साथ ही वन अर्थ, वन फैमिली और वन फ्यूचर को स्थान दिया गया है। मोदी ने कहा कि इस लोगो और थीम के माध्यम से एक संदेश दिया गया है। हिंसा के प्रतिरोध में महात्मा गांधी के जो समाधान हैं। इस के जरिए भारत उनकी वैश्विक प्रतिष्ठा को नई ऊर्जा दे रहा है।

नरेन्द्र मोदी ने संयुक्तराष्ट्र महासभा में भी कहा था कि भारत युद्ध नहीं बुद्ध का देश है। प्रतीक चिन्ह में कमल का फूल भारत की पौराणिक धरोहर, हमारी आस्था और हमारी बौद्धिकता को चित्रित करता है। प्रतीक चिन्ह के कमल की सात पंखुड़ियां दुनिया के सात महाद्वीपों और संगीत के सात स्वरों का प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रतीक चिन्ह इस आशा को जगाता है कि दुनिया एक साथ आगे बढ़ेगी।

ये लोगो केवल एक प्रतीक चिन्ह नहीं है। ये एक संदेश है। ये एक भावना है, जो हमारी रगों में है। ये एक संकल्प है, जो हमारी सोच में शामिल रहा है। इसमें वसुधैव कुटुम्बकम' के मंत्र की भावना हैं। इसमें पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य के मुख्य वाक्य में प्रतिबिंबित हो रहा है। प्रतीक चिन्ह में कमल इन विपरीत परिस्थितयों में आशा जगाता है। चाहे कितनी भी विपरीत परिस्थितियां हों कमल खिलता रहता है। आजादी के अमृतकाल में देश के सामने इसकी अध्यक्षता का बड़ा अवसर है। यह भारत के लिए गर्व और गौरव की बात है। यह ऐसे देशों का समूह है जो विश्व के सकल घरेलू उत्पाद जीडीपी में पच्चासी प्रतिशत की भागीदारी रखता है।

इन देशों में दुनिया की दो तिहाई जनसंख्या रहती है। विश्व व्यापार में इसकी पचहत्तर प्रतिशत की भागीदारी है। भारती का प्रयास रहेगा कि विश्व में दुनिया में कोई 'पहली दुनिया' या 'तीसरी दुनिया' न हो, बल्कि एक दुनिया' हो। कांग्रेस ने इस विषय को भी अपनी राजनीति का अवसर मान लिया है। लोगो के माध्यम से भारतीय

मुजफ्फरनगर में स्कूल बना चुनावी प्रयोगशाला

राकेश त्रिपाठी

चिंगारी का खेल बुरा होता है। विशेष तौर पर जहां ज्वलनशील पदार्थ हो वहां चिंगारी जानलेवा हो सकती है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के हालात कुछ इसी प्रकार के हैं विशेष कर मुजफ्फरनगर। देश भूला नहीं है वर्ष 2013 में कवाल गांव में सचिन और गौरव की बहन के साथ छेड़खानी की घटना हुई थी जिसका विरोध करने पर सचिन और गौरव की पीट पीट कर हत्या हो गई। हत्यारों पर कार्रवाई ना किये जाने से आक्रोश उन्माद में तब्दील हो गया और एक ऐसा मामला जो मजबूत कानून व्यवस्था से रोका जा सकता था, सांप्रदायिक दंगे में बदल गया ।

60 से अधिक लोगों की जान गई सैकड़ो लोगों के मकान जले, लोगों के रोजी रोजगार गए,हजारों लोगों को शरणार्थी जीवन बिताना पड़ा। दंगे की इस त्रासदी को हिंदू और मुसलमान दोनों ने झेला। मुजफ्फरनगर दंगे से आसपास के कई जिले प्रभावित हुए। अखिलेश सरकार की मजहबी तुष्टिकरण की नीति ने दंगों की आग पर पानी डालने के बजाय पेट्रोल छिड़का। कर्फ्यू लगा, कई बेगुनाह जेल भेजे गए, भाजपा के दो विधायकों पर गलत ढंग से रासुका तामील करने की कोशिश की। इन सारे कारणों से बात बनने के बजाय और बिगड़ती गयी। वक्त सबसे बड़ा मरहम होता है, वक्त बीता और जख्म धीरे–धीरे सूखने लगे। उत्तर प्रदेश में सत्ता का परिवर्तन भी हो गया।

योगी आदित्यनाथ के रूप में उत्तर प्रदेश में एक ऐसा सफल प्रशासक मिला जिसने मजहबी तुष्टिकरण की नीति को पूरी तरह से धूल– धूसरित कर दिया। कानून व्यवस्था के सख्त प्रभाव के कारण उत्तर प्रदेश से सांप्रदायिक दंगे पूरी तरह से समाप्त हो गए। ना केवल कावड़ यात्रा में डीजे पर लगी रोक हटी बल्कि सुगम कावड़ यात्रा के यात्रियों पर हेलीकॉप्टर से पुष्प वर्षा कर जनमानस का भरोसा भी जीता। बिना भेदभाव के मंदिर और मस्जिद दोनों से ध्वनि विस्तारक यंत्र हटवाए गए। समाज में भरोसा स्थापित हुआ कि अगर कोई गलत करेगा तो कानून बिना जाति मजहब की परवाह किए कठोरता से करवाई करेगा। कानूनी कार्यवाही में राजनीतिक हस्तक्षेप बंद हुआ और इसके सफल परिणाम उत्तर प्रदेश की जनता ने महसूस किये। पिछले 6 वर्षों में उत्तर प्रदेश में किसी भी जिले में कर्फ्यू नहीं लगाना पड़ा। जहां किसी ने भी दंगा करने की चेष्टा की, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने का प्रयास किया, वहां ना केवल बुलडोजर चलाकर ऐसे दंगाइयों के हौसलों को ध्वस्त किया बल्कि नुकसान की वसूली कराकर एक नज़ीर स्थापित कर दी। इसी कारण से 2022 के विधानसभा चुनाव में कानून व्यवस्था उत्तर प्रदेश में सकारात्मक मुद्दे के तौर पर उभर कर सामने आया, योगी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि बना।

लेकिन यह बात विपक्षी दलों को रास नहीं आ रही। इसीलिए विपक्षी दल हर संभव प्रयास कर रहे हैं कि उत्तर प्रदेश की इस शांत फिजा में कैसे मजहबी रंग घोला जाये। सपा बसपा कांग्रेस ने अपने कई महारथियों को बाकायदा इस मिशन पर लगा रखा है जो लगातार अपनी बदजूबानी से सांप्रदायिक सद्भाव बिगड़ने का भरपूर प्रयास करते हैं। कभी हिंदू देवी देवताओं साधु संतों ग्रंथो और पुराणों पर आपत्तिजनक टिप्पणी करते हैं तो कभी मुसलमानों भी बरगलाने व भड़काने वाले बयान देते हैं। लेकिन विपक्ष के सभी प्रयास विफल हुए हैं अफवाह तंत्र टूटा है। लेकिन विपक्ष है कि बाज ही नहीं आता।

मौजूदा मुजफ्फरनगर के घटनाक्रम में भी ऐसे ही अफवाह तंत्र का सहारा लिया जा रहा है। मुजफ्फरनगर के एक निजी पब्लिक स्कूल में घटित एक सामान्य सी घटना पर पूरा विपक्ष एकजुट होकर हमलावर हो गया। मुजफ्फरनगर संवेदनशील है, 2013 के गहरे घाव उभरते के फिर प्रयास किये जा रहे हैं। विकलांग शिक्षिका की एक गलती के आवरण में फिर षड्यंत्र बुना जा रहा है। नई शिक्षा नीति के तहत क्लासरूम में बच्चों की पिटाई पूरी तरह प्रतिबंध की गई है। इस मामले में भी यह अपराध हुआ है। पिटने वाला छात्र है और पीटने वाले भी छात्र हैं। शिक्षिका के निर्देश पर छात्रों द्वारा छात्र की पिटाई को कोई भी वाजिब नहीं ठहरा सकता। यह कृत्य निंदनीय है और दंडनीय भी। लेकिन इस पूरे घटनाक्रम के कई तथ्यों को जानबूझकर छिपाने का प्रयास किया गया। मसलन वायरल वीडियो पिटने वाले छात्र के चाचा नदीम द्वारा ही बनाया जा रहा है। पीटने वाले छात्र हिंदू और मुसलमान दोनों ही हैं। होमवर्क पूरा ना करने और पढ़ाई में लापरवाही करने पर बच्चें को टाइट करने का आग्रह पिटने वाले बच्चे के परिजनों के द्वारा ही किया गया था। बावजूद इसके बच्चों की पिटाई को किसी भी स्थिति में न्यायोचित नहीं माना जा सकता, यह बात अलग है कि पढ़ाने वाले शिक्षकों ने अपनी पढ़ाई के दौरान अपने शिक्षकों से पिटाई झेली है। लेकिन इस पूरे मामले में कोई मजहबी एंगल नहीं था। इससे पहले भी पूरे गांव में कभी भी किसी ने मजहबी भेदभाव की कोई शिकायत नहीं की है जबकि विद्यालय में दोनों ही मजहब के विद्यार्थी पढ़ते हैं। चिंगारी का खेल खेलने

अमृतकाल के भारत का सामर्थ्य दुनिया के सामने: योगी

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने "शंखनाद अभियान" की कार्यशाला में भाजपा सोशल मीडिया टीम से आगामी लोकसभा चुनाव के लिए अभी से जुटने का आह्वान किया। केंद्र और प्रदेश सरकार की उपलब्धियों को जनता के बीच ले जाने के लिए विभिन्न ऑनलाइन माध्यमों का भरपूर उपयोग करने के लिए कई टिप्स दिये। विरोधी दल के किसी भी झूठ का जवाब योजना के लाभार्थियों के जरिये दिलाएं। इससे ना सिर्फ विरोधियों के झूठ का पर्दाफाश होगा, बल्कि इससे उन्हें मुंहतोड़ जवाब भी मिलेगा।

सोशल मीडिया पर नकारात्मक सूचनाओं का सही समय पर जवाब देना जरूरी है। सही और तार्किक जवाब दें, साथ ही भाषाई मर्यादा का भी विशेष ध्यान रखें। योजनाओं की जानकारी रखें। इस समय विरोधियों के पास कोई मुद्दा नहीं है। भारतीय जनता पार्टी उत्तर प्रदेश के आईटी और सोशल मीडिया विभाग की प्रदेश स्तरीय कार्यशाला रविवार को इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान लखनऊ में सम्पन्न हुई। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी, प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी जी, प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री बृजेश पाठक जी तथा प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह जी की मौजूदगी में हुई। कार्यशाला में भाजपा के "शंखनाद अभियान" का भी उद्घोष हुआ।

प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने आईटी एवं सोशल मीडिया की कार्यशाला में कहा कि वर्तमान दौर युवा शक्ति का दौर है। आज का युवा सोशल मीडिया के अनेको प्लेटफार्म पर सक्रियता के साथ जुड़ा हुआ है। उन्होने कहा अपनी बात, अपनी विचारधारा और सरकार के कार्यो को आमजनमानस तक सहजता और सरलता के साथ शीघ्रता से पहुंचाने में सोशल मीडिया एक सशक्त माध्यम है। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि कई बार ऐसे प्रकरण सामने आते है कि जब विपक्षी दल झूठे आरोपो और घटनाओं को तोड़–मोड़ कर मनगढ़त ढ़ग से प्रस्तुत करके सोशल मीडिया पर हमारी सरकार और संगठन के खिलाफ दुष्प्रचार करता है। ऐसे में हम सभी कार्यकर्ताओं का यह दायित्व बनता है कि वे सजगता के साथ ऐसे दुष्प्रचार का तुरन्त तार्किक ढ़ग से तथ्यपरक जवाब दे। इसके लिए आवश्यक है कि हम हमेशा अपडेट रहे।

उन्होंने कहा सोशल मीडिया का महत्व दिनों दिन बढ़ता जा है।

उपमुख्यमंत्री श्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि चुनाव की रणभेरी बज चुकी है। 2014 के लोकसभा चुनाव के बाद से सोशल मीडिया और आइटी विभाग के कार्यकर्ताओं की भूमिका बढ़ी हैं। सोशल मीडिया के कार्यकर्ताओं को पूरी सक्रियता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए 24 घंटे सजग रहते हुए सोशल मीडिया के हर प्लेटफार्म पर सक्रिय रहना होगा। उन्होंने कहा हम सबको सोशल मीडिया के प्रत्येक प्लेटफार्म पर न सिर्फ विपक्षी दलों द्वारा फैलाये जा रहे दुष्प्रचार को तथ्यात्मक ढ़ग से जवाब देना है बल्कि केन्द्र व राज्य सरकार की योजनाओं का भी प्रचार प्रसार करना है।

प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि सोशल मीडिया में भारतीय जनता पार्टी की प्रभावी पक्ष के लिए शंखनाद अभियान प्रारम्भ किया जा रहा है। आगामी दिनों में जिलों की कार्यशाला होगी। सोशल मीडिया में सक्रियता तथा रूचि रखने वाले कार्यकर्ताओं की मजबूत व प्रभावी टीम के साथ भारतीय जनता पार्टी लोकसभा चुनाव के मैदान में उतरेगी। सोशल मीडिया का रूप बदलता जा रहा है और इस बदलाव के साथ हमें भी अपनी कार्यपद्धति को निरन्तर बदलते रहना है। हमारी सोशल मीडिया पर उपस्थिति प्रभावी, तार्किक और तथ्यपरक होना चाहिए। भारतीय जनता पार्टी की उत्तर प्रदेश इकाई के कार्यकर्ता दुरूह लक्ष्यों को भी प्राप्त करना जानते हैं।

सोशल मीडिया के प्रदेश प्रभारी व राष्ट्रीय टीम के सदस्य श्री स्वयं बराल ने कहा कि टीम वर्क के साथ देश के सभी साइबर योद्धाओं को काम करना है। आज सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म है, जिनमें सतत सक्रियता तथा सहभागिता से अपनी बात कहनें और अपनी विचारधारा को लोगों तक पहुंचाना संभव होता है। जिस प्रकार सोशल मीडिया के तौर तरीके बदल रहे है उसी के अनुरूप हमें भी अपडेट रहना पड़ेगा। आगामी दिनों में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस की तकनीकि प्रभावी भूमिका निर्वहन करेगी।

कार्यशाला के प्रारम्भ में प्रस्तावना रखते हुए पार्टी के प्रदेश महामंत्री श्री अनूप गुप्ता ने कहा कि प्रदेश में सोशल मीडिया के कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण हेतु जिलास्तर पर

नव मतदाता, हर बूथ पर

भारतीय जनता पार्टी द्वारा प्रदेश में नव मतदाताओं के नाम मतदाता सूची में दर्ज करवाने और मतदाता सूची पुनरीक्षण अभियान में पार्टी कार्यकर्ताओं की सक्रिय भीगीदारी सुनिश्चित करने के लिए "वोटर चेतना महाभियान" प्रारम्भ किया गया है। कार्यशाला में पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री दुष्यंत गौतम और प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कार्यशाला में उपस्थित प्रतिनिधियों को संबोधित किया। कार्यशाला में पार्टी के प्रदेश पदाधिकारी, क्षेत्रीय अध्यक्ष, क्षेत्रीय प्रभारी, क्षेत्रीय मतदाता प्रमुख, जिलाध्यक्ष, जिला प्रभारी व जिला मतदाता प्रमुख सम्मिलित हुए।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री दुष्यंत गौतम ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा मतदाता पुनरीक्षण कार्य प्रारम्भ किया गया है। जिसमें जिम्मेदार राजनैतिक दल की भूमिका निभाते हुए भाजपा घर–घर जाकर युवाओं को नव मतदाता बनाने के लिए सम्पर्क करेगी। भाजपा का विचार है कि शत प्रतिशत मतदान से लोकतंत्र की मजबूती के साथ जवाबदेही भी बढेगी। इसलिए भाजपा के पदाधिकारी, नेता तथा एक–एक कार्यकर्ता चुनाव आयोग के दिशा निर्देश में नए मतदाता बनाने, मतदाता सूचियों के संशोधन में सहयोग के साथ शत प्रतिशत मतदान के लिए जनजागरण का कार्य भी करते है और भाजपा की बूथ समिति, सेक्टर समिति तथा पन्ना प्रमुख मतदाता को मतदान केन्द्र तक पहुंचाने का कार्य भी करते है।

प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि "वोटर चेतना महाभियान" के अन्तर्गत पार्टी कार्यकर्ता संगठन को योजनानुसार नव मतदाताओं के नाम मतदाता सूची के दर्ज करवाने का कार्य करें। उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत की पहचान पूरे विश्व में एक सशक्त राष्ट्र के रूप में बनी है। आज बड़ी संख्या में समाज के हर वर्ग के लोग भाजपा से जुड़ रहे है। प्रत्येक बूथ पर 27 अगस्त को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मन की बात कार्यक्रम को सुनने के पश्चात् वोटर चेतना महाभियान के तहत मतदाता सूची सत्यापन, वाचन तथा अवलोकन का कार्य करना है। इसके साथ ही मतदाताओं के कटे हुए नाम, नए संभावित मतदाताओं तथा परिवर्तित पते वाले नामों की सूची बनाने का कार्य भी करना है। इसके पश्चात् घर–घर सम्पर्क का महाभियान 1 सितम्बर से 15 सितम्बर तक चलेगा। जिसमें पार्टी के प्रदेश से लेकर बूथ तक के सभी पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता सम्मिलित रहेंगे।

प्रदेश महामंत्री श्री अनूप गुप्ता ने जिला तथा मंडल कार्यशालाओं के करणीय कार्य तथा अभियान की जानकारी साझा करते हुए कहा कि बीएलए–2 की सूची सभी जिलों में शीघ्र तैयार करना है और अभियान का पूरा रोडमैप तैयार काम करना हैं, जिससे कोई घर, कोई व्यक्ति, कोई वर्ग सम्पर्क से न छूट जाए।

कार्यशाला में अभियान टोली के सदस्य प्रदेश उपाध्यक्ष श्री मानवेन्द्र सिंह तथा सांसद श्री सुब्रत पाठक ने पुष्पगुच्छ भेंट कर राष्ट्रीय महामंत्री एवं प्रदेश अध्यक्ष का स्वागत किया।

हमारे सपने और प्रयास दोनों बड़े: मोदी

सावन यानि महाशिव का महीना, उत्सव और उल्लास का महीना। चंद्रयान की सफलता ने उत्सव के इस माहौल को कई गुना बढ़ा दिया है। चंद्रयान को चन्द्रमा पर पहुँचे, तीन दिन से ज्यादा का समय हो रहा है। ये सफलता इतनी बड़ी है कि इसकी जितनी चर्चा की जाए, वो कम है। जब आज आपसे बात कर रहा हूँ तो एक पुरानी मेरी कविता की कुछ पंक्तियां याद आ रही हैं–

आसमान में सिर उठाकर, घने बादलों को चीरकर
रोशनी का संकल्प ले, अभी तो सूरज उगा है।
दृढ़ निश्चय के साथ चलकर, हर मुश्किल को पार कर
घोर अंधेरे को मिटाने, अभी तो सूरज उगा है।
आसमान में सिर उठाकर, घने बादलों को चीरकर
अभी तो सूरज उगा है।

मेरे परिवारजन, 23 अगस्त को भारत ने और भारत के चंद्रयान ने ये साबित कर दिया है कि संकल्प के कुछ सूरज चाँद पर भी उगते हैं। मिशन चंद्रयान नए भारत की उस spirit का प्रतीक बन गया है, जो हर हाल में जीतना चाहता है, और हर हाल में, जीतना जानता भी है।

साथियो, इस मिशन का एक पक्ष ऐसा भी रहा जिसकी आज मैं आप सब के साथ विशेष तौर पर चर्चा करना चाहता हूं। आपको याद होगा इस बार मैंने लाल किले से कहा है कि हमें Women Led Development को राष्ट्रीय चरित्र के रूप में सशक्त करना है। जहां महिला शक्ति का सामर्थ्य जुड़ जाता है, वहाँ असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है। भारत का मिशन चंद्रयान, नारीशक्ति का भी जीवंत उदाहरण है। इस पूरे मिशन में अनेकों Women Scientists और Engineers सीधे तौर पर जुड़ी रही हैं। इन्होंने अलग–अलग systems के project director, project manager ऐसी कई अहम जिम्मेदारियां संभाली हैं। भारत की बेटियां अब अनंत समझे जाने वाले अंतरिक्ष को भी चुनौती दे रही हैं। किसी देश की बेटियाँ जब इतनी आकांक्षी हो जाएं, तो उसे, उस देश को, विकसित बनने से भला कौन रोक सकता है!

साथियो, हमने इतनी ऊंची उड़ान इसलिए पूरी की है, क्योंकि आज हमारे सपने भी बड़े हैं और हमारे प्रयास भी बड़े हैं। चंद्रयान–3 की सफलता में हमारे वैज्ञानिकों के साथ ही दूसरे सेक्टर्स की भी अहम भूमिका रही है। तमाम पार्ट्स और तकनीकी जरूरतों को पूरा करने में कितने ही देशवासियों ने योगदान दिया है। जब सबका प्रयास लगा, तो सफलता भी मिली। यही चंद्रयान–3 की सबसे बड़ी सफलता है। मैं कामना करता हूँ कि आगे भी हमारा Space Sector सबका प्रयास से ऐसे ही अनगिनत सफलताएँ हासिल करेगा।

मेरे परिवारजनों, सितम्बर का महीना, भारत के सामर्थ्य का साक्षी बनने जा रहा है। अगले महीने होने जा रही G–20 Leaders Summit के लिए भारत पूरी तरह से तैयार है। इस आयोजन में भाग लेने के लिए 40 देशों के

राष्ट्राध्यक्ष और अनेक Global Organisations राजधानी दिल्ली आ रहे हैं। G-20 Summit के इतिहास में ये अब तक की सबसे बड़ी भागीदारी होगी। अपनी presidency के दौरान भारत ने G–20 को और ज्यादा inclusive forum बनाया है। भारत के निमंत्रण पर ही African Union भी G–20 से जुड़ी और अफ्रीका के लोगों की आवाज दुनिया के इस अहम प्लेटफार्म (platform)तक पहुंची। साथियो, पिछले साल, बाली में भारत को G–20 की अध्यक्षता मिलने के बाद से अब तक इतना कुछ हुआ है, जो हमें गर्व से भर देता है। दिल्ली मंस बड़े–बड़े कार्यक्रमों की परंपरा से हटकर, हम इसे देश के अलग–अलग शहरों में ले गए। देश के 60 शहरों में इससे जुड़ी करीब–करीब 200 बैठकों का आयोजन किया गया। G–20 Delegates जहां भी गए, वहां लोगों ने गर्मजोशी से उनका स्वागत किया। ये Delegates हमारे देश की diversity देखकर, हमारी vibrant democracy देखकर, बहुत ही प्रभावित हुए। उन्हें ये भी एहसास हुआ कि भारत में कितनी सारी संभावनाएं हैं।

साथियो, G–20 की हमारी Presidency, People's Presidency है, जिसमें जनभागीदारी की भावना सबसे आगे है। G–20 के जो ग्यारह Engagement Groups थे, उनमें Academia, Civil Society, युवा, महिलाएं, हमारे सांसद, Entrepreneurs और Urban Administration से जुड़े लोगों ने अहम भूमिका निभाई। इसे लेकर देशभर में जो आयोजन हो रहे हैं, उनसे, किसी न किसी रूप से डेढ़ करोड़ से अधिक लोग जुड़े हैं। जनभागीदारी की हमारी इस कोशिश में एक ही नहीं, बल्कि दो–दो विश्व रिकॉर्ड (record) भी बन गए हैं। वाराणसी में हुई G–20 Quiz में 800 स्कूलों के सवा लाख स्टूडेंट्स (Students) की भागीदारी एक नया विश्व रिकॉर्ड बन गया। वहीं, लंबानी कारीगरों ने भी कमाल कर दिया। 450 कारीगरों ने करीब 1800 Unique Patches का आश्चर्यजनक Collection बनाकर, अपने हुनर और Craftsmanship का परिचय दिया है। G–20 में आए हर प्रतिनिधि हमारे देश की Artistic Diversity को देखकर भी बहुत हैरान हुए। ऐसा ही एक शानदार कार्यक्रम सूरत में आयोजित किया गया। वहां हुए 'साड़ी सांजीवद' में 15 राज्यों की 15,000 महिलाओं ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम से सूरत की Textile Industry को तो बढ़ावा मिला ही, (Vocal for Local) 'वोकल फॉर लोकल' को भी बल मिला और लोकल के लिए ग्लोबल होने का रास्ता भी बना। श्रीनगर में G–20 की बैठक के बाद कश्मीर के पर्यटकों की संख्या में भारी बढ़ोतरी देखी जा रही है। मैं, सभी देशवासियो को कहूँगा कि आइए, मिलकर G–20 सम्मलेन को सफल बनाएं, देश का मान बढ़ाएं।

मेरे परिवारजनों, 'मन की बात' के Episode में हम अपनी युवा पीढ़ी के सामर्थ्य की चर्चा अक्सर करते रहते हैं। आज, खेल–कूद एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ हमारे युवा निरंतर नई सफलताएँ हासिल कर रहे हैं। मैं आज 'मन की बात' में, एक ऐसे Tournament की बात करूंगा जहाँ हाल ही में हमारे खिलाड़ियों ने देश का परचम लहराया है। कुछ ही दिनों पहले चीन में World University Games हुए थे। इन खेलों में इस बार भारत की Best Ever Performance रही है। हमारे खिलाड़ियों ने कुल 26 पदक जीते, जिनमें से 11 Gold Medal (गोल्ड मेडल) थे। आपको ये जानकर अच्छा लगेगा कि 1959 से लेकर अब तक जितने World University Games हुए हैं, उनमें जीते सभी Medals को जोड़ दें तो भी ये संख्या 18 तक ही पहुँचती है। इतने दशकों में सिर्फ 18, जबकि इस बार हमारे खिलाड़ियों ने 26 Medal जीत लिए। इसलिए, World University Games में Medal जीतने वाले कुछ युवा खिलाड़ी, विद्यार्थी इस समय Phone Line (फोन लाइन) पर मेरे साथ जुड़े हुए हैं। मैं सबसे पहले इनके बारे में आपको बता दूँ। यूपी की रहने वाली प्रगति ने Archery (आर्चरी) में Medal जीता है। असम के रहने वाले अम्लान ने Athletics (एथलेटिक्स) में Medal जीता है। यूपी की रहने वाली प्रियंका ने Race Walk (रेस वाक) में Medal जीता है। महाराष्ट्र की रहने वाली अभिदन्या ने Shooting (शूटिंग) में Medal जीता है।

खेल की दुनिया में भारत को बहुत खिलना चाहिए और इसलिए मैं इन चीज़ों को बहुत बढ़ावा दे रहा हूँ, लेकिन Hockey, football, कबड्डी, खो–खो, ये हमारी धरती से जुड़े हुए खेल हैं, इसमें तो हमें, कभी, पीछे नहीं रहना चाहिए और मैं देख रहा हूँ कि archery में हमारे लोग अच्छा कर रहे हैं, shooting में अच्छा कर रहे हैं। और दूसरा मैं देख रहा हूँ कि हमारे youth में और even परिवारों में भी खेल के प्रति पहले जो भाव था वो नहीं है। पहले तो बच्चा खेलने जाता था तो रोकते थे, और अब, बहुत बड़ा वक्त बदला है और आप लोगों ने जो Success लेते आ रहे हैं न, वो, सभी परिवारों को, Motivate करती है। हर खेल में जहाँ भी हमारे बच्चें जा रहे हैं, कुछ न कुछ देश के लिए करके आते हैं। और ये ख़बरें आज देश में प्रमुखता से दिखाई भी जाती हैं, बताई जाती हैं और School, College में चर्चा में भी रहती हैं।

मेरे परिवारजनों, इस बार 15 अगस्त के दौरान देश ने 'सबका प्रयास' का सामर्थ्य देखा। सभी देशवासियों के

प्रयास ने 'हर घर तिरंगा अभियान' को वास्तव में 'हर मन तिरंगा अभियान' बना दिया। इस अभियान के दौरान कई Record भी बने। देशवासियों ने करोड़ों की संख्या में तिरंगे खरीदे। डेढ़ लाख Post Offices के जरिए करीब डेढ़ करोड़ तिरंगे बेचे गए। इससे हमारे कामगारों की, बुनकरों की, और खासकर महिलाओं की सैकड़ों करोड़ रुपए की आय भी हुई है। तिरंगे के साथ Selfie Post करने में भी इस बार देशवासियों ने नया Record बना दिया। पिछले साल 15 अगस्त तक करीब 5 करोड़ देशवासियों ने तिरंगे के साथ Selfie Post की थी। इस साल ये संख्या 10 करोड़ को भी पार कर गई है।

साथियो, इस समय देश में 'मेरी माटी, मेरा देश' देशभक्ति की भावना को उजागर करने वाला अभियान जोरों पर है। सितंबर के महीने में देश के गाँव–गाँव में, हर घर से मिट्टी जमा करने का अभियान चलेगा। देश की पवित्र मिट्टी हजारों अमृत कलश में जमा की जाएगी। अक्टूबर के अंत में हजारों अमृत कलश यात्रा के साथ देश की राजधानी दिल्ली पहुँचेंगे। इस मिट्टी से ही दिल्ली में अमृत वाटिका का निर्माण होगा। मुझे विश्वास है, हर देशवासी का प्रयास, इस अभियान को भी सफल बनाएगा।

मेरे परिवारजनों, इस बार मुझे कई पत्र संस्कृत भाषा में मिले हैं। इसकी वजह यह है कि सावन मास की पूर्णिमा, इस तिथि को विश्व संस्कृत दिवस मनाया जाता है।

आप सभी को विश्व संस्कृत दिवस की बहुत–बहुत बधाई। हम सब जानते हैं कि संस्कृत दुनिया की सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक है। इसे कई आधुनिक भाषाओं की जननी भी कहा जाता है। संस्कृत अपनी प्राचीनता के साथ–साथ अपनी वैज्ञानिकता और व्याकरण के लिए भी जानी जाती है। भारत का कितना ही प्राचीन ज्ञान हजारों वर्षों तक संस्कृत भाषा में ही संरक्षित किया गया है। योग, आयुर्वेद और philosophy जैसे विषयों पर research करने वाले लोग अब ज्यादा से ज्यादा संस्कृत सीख रहे हैं। कई संस्थान भी इस दिशा में बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। जैसे कि Sanskrit Promotion foundation, Sanskrit for Yog, Sanskrit for Ayurveda और Sanskrit for Buddhism जैसे कई Courses करवाता है। 'संस्कृत भारती' लोगों को संस्कृत सिखाने का अभियान चलाती है। इसमें आप 10 दिन के 'संस्कृत संभाषण शिविर' में भाग ले सकते हैं। मुझे खुशी है कि आज लोगों में संस्कृत को लेकर जागरूकता और गर्व का भाव बढ़ा है। इसके पीछे बीते वर्षों में देश का विशेष योगदान भी है। जैसे तीन Sanskrit Deemed Universities को 2020 में Central Universities बनाया गया। अलग–अलग शहरों में संस्कृत विश्वविद्यालयों के कई कॉलेज और संस्थान भी चल रहे हैं। IITs और IIMs जैसे संस्थानों में संस्कृत केंद्र काफी Popular हो रहे हैं।

साथियो, अक्सर आपने एक बात ज़रूर अनुभव की होगी, जड़ों से जुड़ने की, हमारी संस्कृति से जुड़ने की, हमारी परम्परा का बहुत बड़ा सशक्त माध्यम होती है– हमारी मातृभाषा। जब हम अपनी मातृभाषा से जुड़ते हैं, तो हम सहज रूप से अपनी संस्कृति से जुड़ जाते हैं। अपने संस्कारों से जुड़ जाते हैं, अपनी परंपरा से जुड़ जाते हैं, अपने चिर पुरातन भव्य वैभव से जुड़ जाते हैं। ऐसे ही भारत की एक और मातृभाषा है, गौरवशाली तेलुगू भाषा। 29 अगस्त तेलुगू दिवस मनाया जायेगा।

आप सभी को तेलुगू दिवस की बहुत–बहुत बधाई। तेलुगू भाषा के साहित्य और विरासत में भारतीय संस्कृति के कई अनमोल रत्न छिपे हैं। तेलुगू की इस विरासत का लाभ पूरे देश को मिले, इसके लिए कई प्रयास भी किये जा रहे हैं।

मेरे परिवारजनों, 'मन की बात' के कई Episodes में हमने Tourism पर बात की है। चीजों या स्थानों को साक्षात् खुद देखना, समझना और कुछ पल उनको जीना, एक अलग ही अनुभव देता है।

कोई समंदर का कितना ही वर्णन कर दे लेकिन हम समंदर को देखे बिना उसकी विशालता महसूस नहीं कर सकते। कोई हिमालय का कितना ही बखान कर दे, लेकिन हम हिमालय को देखे बिना उसकी सुन्दरता का आकलन नहीं कर सकते। इसलिए ही मैं अक्सर आप सभी से ये आग्रह करता हूँ कि जब मौका मिले, हमें अपने देश की Beauty अपने देश की Diversity उसे ज़रूर देखने जाना चाहिए। अक्सर हम एक और बात भी देखते हैं हम भले ही दुनिया का कोना–कोना छान लें लेकिन अपने ही शहर या राज्य की कई बेहतरीन जगहों और चीजों से अनजान होते हैं।

कई बार ऐसा होता है कि लोग अपने शहर के ही ऐतिहासिक स्थलों के बारे में ज्यादा नहीं जानते। ऐसा ही कुछ धनपाल जी के साथ हुआ। धनपाल जी, बेंगलुरु के Transport Office में driver का काम करते थे। करीब 17 साल पहले उन्हें Sightseeing wing में ज़िम्मेदारी मिली थी। इसे अब लोग बेंगलुरु दर्शिनी के नाम से जानते हैं। धनपाल जी पर्यटकों को शहर के अलग–अलग पर्यटन स्थलों पर ले जाया करते थे। ऐसी ही एक trip पर किसी tourist ने उनसे पूछ लिया, बेंगलुरु में जंदा को सेंकी टैंक क्यों कहा जाता है। उन्हें बहुत ही ख़राब लगा कि उन्हें इसका जवाब पता नहीं

था। ऐसे में उन्होंने खुद की जानकारी बढ़ाने पर विबने किया। अपनी विरासत को जानने के इस जुनून में उन्हें अनेक पत्थर और शिलालेख मिले। इस काम में धनपाल जी का मन ऐसा रमा – ऐसा रमा, कि उन्होंने epigraphy (एपिग्राफी) यानि शिलालेखों से जुड़े विषय में Diploma भी कर लिया। हालाँकि अब वे retire हो चुके हैं, लेकिन बेंगलुरु के इतिहास खंगालने का उनका शौक अब भी बरक़रार है।

साथियो, मुझे Brian D- Kharpran (ब्रायन डी खारप्रन) के बारे में बताते हुए बेहद खुशी हो रही है। ये मेघालय के रहने वाले हैं और उनकी Speleology (स्पेलियो–लॉजी) में गज़ब की दिलचस्पी है। सरल भाषा में कहा जाए तो इसका मतलब है – गुफाओं का अध्ययन। वर्षों पहले उनमें यह Interest तब जगा, जब उन्होंने कई Story Books पढ़ी। 1964 में उन्होंने एक स्कूली छात्र के रूप में अपना पहला Exploration किया। 1990 में उन्होंने अपने दोस्त के साथ मिलकर एक Association की स्थापना की और इसके जरिए मेघालय की अनजान गुफाओं के बारे में पता लगाना शुरू किया। देखते ही देखते उन्होंने अपनी Team के साथ मेघालय की 1700 से ज्यादा गुफाओं की खोज कर डाली और राज्य को World Cave Map पर ला दिया। भारत की सबसे लंबी और गहरी गुफाओं में से कुछ मेघालय में मौजूद हैं। Brian Ji और उनकी Team ने Cave Fauna यानि गुफा के उन जीव–जंतुओं को भी Document किया है, जो दुनिया में और कहीं नहीं पाए जाते हैं। मैं इस पूरी Team के प्रयासों की सराहना करता हूं, साथ ही मेरा यह आग्रह भी है कि आप मेघालय के गुफाओं में घूमने का Plan जरुर बनाएं।

मेरे परिवारजनों, आप सभी जानते हैं कि Dairy Sector, हमारे देश के सबसे important sector में से एक है। हमारी माताओं और बहनों के जीवन में बड़ा परिवर्तन लाने में तो इसकी बहुत अहम भूमिका रही है। कुछ ही दिनों पहले मुझे गुजरात की बनास डेयरी के एक Interesting Initiative के बारे में जानकारी मिली। बनारस Dairy, एशिया की सबसे बड़ी क्पंतल मानी जाती है। यहां हर रोज औसतन 75 लाख लीटर दूध Process किया जाता है। इसके बाद इसे दूसरे राज्यों में भी भेजा जाता है। दूसरे राज्यों में यहां के दूध की समय पर Delivery हो, इसके लिए अभी तक Tanker या फिर Milk Trains (ट्रेनों) का सहारा लिया जाता था। लेकिन इसमें भी चुनौतियां कम नहीं थीं। एक तो यह कि loading और unloading में समय बहुत लगता था और कई बार इसमें दूध भी ख़राब हो जाता था। इस समस्या को दूर करने के लिए भारतीय रेलवे ने एक नया प्रयोग किया। रेलवे ने पालनपुर से न्यू रेवाड़ी तक Truck–on–Track की सुविधा शुरू की। इसमें दूध के ट्रकों को सीधे ट्रेन पर चढ़ा दिया जाता है। यानि transportation की बहुत बड़ी दिक्कत इससे दूर हुई है। Truck–on–Track सुविधा के नतीजे बहुत संतोष देने वाले रहे हैं। पहले जिस दूध को पहुँचाने में 30 घंटे लग जाते थे, वो अब आधे से भी कम समय में पहुँच रहा हैं। इससे जहाँ ईंधन से होने वाला प्रदूषण रुका है, वहीं ईंधन का खर्च भी बच रहा है। इससे बहुत बड़ा लाभ ट्रकों के ड्राईवरों को भी हुआ है, उनका जीवन आसान बना है।

साथियों, Collective Efforts से आज हमारी dairies भी आधुनिक सोच के साथ आगे बढ़ रही है। बनारस डेयरी ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी किस तरह से कदम आगे बढ़ाया है, इसका पता सीडबॉल वृक्षारोपण अभियान से चलता है। Varanasi Milk Union हमारे dairy farmers की आय बढ़ाने के लिए manure management पर काम कर रही है। केरला की मालाबार Milk Union Dairy का प्रयास भी बेहद अनूठा है। यह पशुओं की बिमारियों के इलाज के लिए Ayurvedic Medicines विकसित करने में जुटी है।

साथियो, आज ऐसे बहुत से लोग हैं, जो dairy को अपना कर इसे Diversify कर रहे हैं। राजस्थान के कोटा में dairy farm चला रहे अमनप्रीत सिंह के बारे में भी आपको ज़रूर जानना चाहिए। उन्होंने डेयरी के साथ Biogas पर भी focus किया और दो biogas plants लगाये। इससे बिजली पर होने वाला उनका खर्च करीब 70 प्रतिशत कम हुआ है। इनका यह प्रयास देशभर के dairy farmers को प्रेरित करने वाला है। आज कई बड़ी dairies, biogas पर focus कर रही हैं। इस प्रकार के Community Driven Value addition बहुत उत्साहित करने वाले हैं। मुझे विश्वास है कि देशभर में इस तरह के tren के निरंतर जारी रहेंगे।

मेरे परिवारजनों, मन की बात में आज बस इतना ही। अब त्योहारों का मौसम भी आ ही गया है। आप सभी को रक्षाबंधन की भी अग्रिम शुभकामनाएं। पर्व–उल्लास के समय हमें Vocal for Local के मंत्र को भी याद रखना है। 'आत्मनिर्भर भारत' ये अभियान हर देशवासी का

संगठनात्मक गतिविधियां

भाजपा राष्ट्रीय पदाधिकारियों की घोषणा

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 29 जुलाई, 2023 को निम्नलिखित केंद्रीय पदाधिकारियों की घोषणा की है-

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष		प्रदेश
1.	डॉ. रमन सिंह, विधायक	छत्तीसगढ़
2.	श्रीमती वसुंधरा राजे, विधायक	राजस्थान
3.	श्री रघुबर दास	झारखंड
4.	श्री सौदान सिंह	केंद्र-चंडीगढ़
5.	श्री बैजयंत पांडा	ओडिशा
6.	सुश्री सरोज पाण्डेय, सांसद	छत्तीसगढ़
7.	श्रीमती रेखा वर्मा, सांसद	उत्तर प्रदेश
8.	श्रीमती डी.के. अरुणा	तेलंगाना
9.	श्री एम. चौबा एओ	नागालैंड
10.	श्री अब्दुल्ला कुट्टी	केरल
11.	श्री लक्ष्मीकांत बाजपेयी, सांसद	उत्तर प्रदेश
12.	सुश्री लता उसेंडी	छत्तीसगढ़
13.	श्री तारिक मंसूर, विधान परिषद् सदस्य	उत्तर प्रदेश
राष्ट्रीय महामंत्री		
1.	श्री अरुण सिंह, सांसद	उत्तर प्रदेश
2.	श्री कैलाश विजयवर्गीय	मध्य प्रदेश
3.	श्री दुष्यंत कुमार गौतम	दिल्ली
4.	श्री तरुण चुग	पंजाब
5.	श्री विनोद तावड़े	महाराष्ट्र
6.	श्री सुनील बंसल	केंद्र-दिल्ली
7.	श्री संजय बंदी, सांसद	तेलंगाना
8.	श्री राधाममोहन अग्रवाल, सांसद	उत्तर प्रदेश

राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन)		
1.	श्री बी. एल. संतोष	केंद्र-दिल्ली
राष्ट्रीय सह-संगठन महामंत्री		
1.	श्री शिवप्रकाश	केंद्र-मुंबई
राष्ट्रीय सचिव		
1.	श्रीमती विजया राहटकर	महाराष्ट्र
2.	श्री सत्या कुमार	आंध्र प्रदेश
3.	श्री अरविन्द मेनन	दिल्ली
4.	श्रीमती पंकजा मुंडे	महाराष्ट्र
5.	डॉ. नरेन्द्र सिंह रैना	पंजाब
6.	श्रीमती (डॉ.) अल्का गुर्जर	राजस्थान
7.	श्री अनुपम हाजरा	पश्चिम बंगाल
8.	श्री ओमप्रकाश धुर्वे	मध्य प्रदेश
9.	श्री ऋतुराज सिन्हा	बिहार
10.	श्रीमती आशा लाकड़ा	झारखंड
11.	श्री कामख्या प्रसाद तासा, सांसद	असम
12.	श्री सुरेन्द्र सिंह नागर, सांसद	उत्तर प्रदेश
13.	श्री अनिल अंटोनी	केरल
कोषाध्यक्ष		
1.	श्री राजेश अग्रवाल	उत्तर प्रदेश
सह-कोषाध्यक्ष		
1.	श्री नरेश बंसल	उत्तराखंड

मोदी स्टोरी

नरेन्द्र मोदी प्रत्येक कार्यकर्ता का सम्मान करते हैं

— हितेश ठक्कर

गुजरात में 'सोनो साथ, सोनो विकास' से लेकर केंद्र में 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' तक, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एक प्रतीक हैं और एक नेता को कैसे नेतृत्व करना चाहिए, इसका श्रेष्ठ आदर्श उदाहरण हैं। हालांकि, इन सभी नेतृत्व गुणों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा 'सबका सम्मान' से आता है जिसकी चर्चा कम होती है, लेकिन श्री मोदी के नेतृत्व में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

श्री नरेन्द्र मोदी के संगठनात्मक कौशल के बारे में हर कोई जानता है लेकिन संगठन को ताकत उसके कार्यकर्ताओं से मिलती है और श्री नरेन्द्र मोदी एक ऐसे नेता हैं जो अपने कार्यकर्ताओं के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं और उन्हें महसूस कराते हैं कि वह भी उनमें से एक हैं।

हम एक ऐसी घटना की चर्चा कर रहे हैं जहां श्री मोदी के व्यवहार ने उनसे व्यक्तिगत रूप से मिले बिना भी एक कार्यकर्ता को भावुक कर दिया।

यह घटना 2017 की है, जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी प्रदेश विधानसभा चुनाव से पहले एक सार्वजनिक रैली को संबोधित करने के लिए गुजरात के भाभर शहर गए थे।

गुजरात के भाजपा कार्यकर्ता श्री हितेश ठक्कर को हेलीपैड पहुंचने पर प्रधानमंत्री श्री मोदी के लिए चाय और नाश्ते की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी।

हालांकि, प्रधानमंत्री श्री मोदी को दोपहर 12.30 बजे हेलीपैड पर पहुंचना था, लेकिन सुरक्षा कारणों से श्री हितेश को सुबह 10 बजे तक हेलीपैड पर पहुंचने के लिए कहा गया था। श्री हितेश ने अपने घर से चाय और नाश्ता तैयार कराया और ठीक 10 बजे हेलीपैड पर पहुंच गये।

जैसे ही प्रधानमंत्री श्री मोदी का हेलीकॉप्टर उतरा, वह तुरंत रैली स्थल के लिए रवाना हो गए क्योंकि वहां कई लोग उनके भाषण का इंतजार कर रहे थे। हालांकि उनके अधिकारियों ने उन्हें बताया कि एक कार्यकर्ता सुबह से ही चाय-नाश्ता लेकर उनका इंतजार कर रहे हैं।

उस रैली से लौटते समय जैसे ही प्रधानमंत्री श्री मोदी हेलीपैड पर पहुंचे, उन्होंने अपने अधिकारियों से उस कार्यकर्ता को बुलाने के लिए कहा जो सुबह से उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

चूंकि श्री हितेश रैली स्थल पर गये थे, इसलिए सुरक्षा कारणों से वे हेलीपैड पर नहीं लौट सके।

इसके बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने श्री हितेश द्वारा लाया गया नाश्ता और चाय ली। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि जब कार्यकर्ता अपना थर्मस और अन्य बर्तन लेने वापस आएं तो कृपया उन्हें सूचित करें कि श्री मोदी ने चाय और नाश्ता कर लिया है। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें इस बात की सूचना भी दी जाए कि श्री मोदी उनसे मिलना भी चाहते थे।

प्रधानमंत्री श्री मोदी का यह व्यवहार श्री हितेश के दिल को छू गया और उनका कहना है कि इतने व्यस्त कार्यक्रम और इतने समय के बाद भी श्री मोदी के मन में यह बात थी कि एक कार्यकर्ता उनकी प्रतीक्षा कर रहा है। यही बात श्री नरेन्द्र मोदी को अन्य नेताओं से अलग बनाती है। ■

कमल पुष्प

सेवा, समर्पण, त्याग, संघर्ष एवं बलिदान

वेलुरी वेंकटरमैया

आंध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी जिले के राजमुंदरी के श्री वेलुरी वेंकटरमैया का झुकाव स्कूली शिक्षा के दिनों से ही रा.स्व.संघ के प्रति बहुत गहरा था। इसके चलते वे जनसंघ में शामिल हुए और उन्होंने जिला एवं प्रदेश स्तर पर विभिन्न पदों का दायित्व संभाला। वेलुरी जी ने 1971-73 के बीच विशेष आंध्र आंदोलन में भाग लिया। उन्होंने जनसंघ के उम्मीदवार के तौर पर स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के लिए विधान परिषद् का चुनाव लड़ा। ■

श्री वेलुरी वेंकटरमैया

जन्मः 03 अगस्त, 1928
सक्रिय वर्षः 1959-1975
जिलाः पूर्वी गोदावरी

स्वनिधि से समृद्धि
पीएम स्वनिधि एवं स्वयं सहायता समूह ऋण योजना के अंतर्गत
11,000 लाभार्थियों को ऋण वितरण
योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

शाहजहाँपुर
बाढ़ राहत सामग्री

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91, शीर्षक कोडः UPHIN16701, डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2022-23
अगस्त द्वितीय 2023 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 26–29 (द्वितीय पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।